राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 36 अंक 13 अप्रैल 2016 मूल्य 5 रु. पृष्ठ 32

देश के असली हीरो हनुमंथप्पा

'थिंक इंडिया' के रांची में हुए अधिवेशन का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करती झारखंड की राज्यपाल मा. द्रोपदी मुर्मू

पटना की कार्यशाला को संबोधित करते रा. स्व. संघ के बौद्धिक प्रमुख मा. स्वांत रंजन

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

संपादक मण्डल

आशुतोष

संजीव कुमार सिन्हा

अवनीश सिंह राजपूत

अभिषेक रंजन

फोन : 011-23216298

ई-मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com

ब्लॉग :chhatrashaktiabvp.com

वेबसाईट :www.abvp.org

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए राजकुमार शर्मा द्वारा बी-50, विद्यार्थी सदन, क्रिश्चियन कॉलोनी, निकट पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली - 110007 से प्रकाशित एवं 102, एल. एस. सी., ऋषभ विहार मार्केट दिल्ली-92 से मुद्रित।

संपादकीय कार्यालय

''छात्रशक्ति भवन''

26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,

नई दिल्ली - 110002

अनुक्रमणिका

विषय	पृ. सं.
सम्पादकीय	4
देश के असली नायक भगत सिंह और हनुमंथप्पा	5
प्लास्टिक मुक्त सिंहस्थ कुंभ का आह्वान	6
'लगातार बढ़ रही योग और आयुर्वेद की प्रासंगिकता'	7
काशी हिंदू विश्वविद्यालय के स्वर्णिम सौ वर्ष – आकाश कुमार राय	8
'युवा ही ला सकते हैं समाज में बदलाव'	11
देशद्रोही गतिविधियां अमन चैन के लिए खतरा	12
प्रखर राष्ट्रवादी डॉ. भीमराव आंबेडकर – संजीव कुमार सिन्हा	13
राष्ट्रद्रोह के खिलाफ देश एकजुट	16
कर्मठता का श्रेष्ठ एवं आदर्श उदाहरण है सूर्यकृष्ण जी का जीवन	18
विद्यार्थी डटकर करें राष्ट्र विरोधी ताकतों का सामना	19
युवाओं में राष्ट्रप्रेम का भाव जगाने वाली शिक्षा की जरूरत	20
मूल्य आधारित शिक्षा से देश व समाज की तरक्की संभव	22
विद्यार्थियों को सही अवसर प्रदान करेगा 'साविष्कार लाईव'	23
सबको सुलभ हो सस्ती एवं गुणवत्तापरक शिक्षा (प्रस्ताव)	24
'संवैधानिक अधिकारों का दुरूपयोग कर रही केजरीवाल सरकार'	25
400 वर्ष पुरानी परंपरा टूटी, महिलाएं कर सकेंगी शनि पूजा	26
छद्म चेहरा बेनकाब होने का खौफ	28
मदुरै पुलिस का बर्बर चेहरा, अभाविप कार्यकर्ताओं पर लाठी चार्ज	29
जेएनयू के इतिहास और गतिविधियों से रूबरू हुए छात्र	30

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

हाल ही में एक निरर्थक बहस के माध्यम से भारत को माता के रूप में संबोधन पर ही प्रश्न चिन्ह खड़ा किया गया। तर्क दिया गया कि दुष्यन्त पुत्र भरत, एक पुरुष, के नाम पर जिसका नामकरण किया गया हो उसे माता कह कर कैसे संबोधित किया जा सकता है। भारत में कुछ बुद्धिजीवियों ने अपने आप को यह छूट दे रखी है कि उनके द्वारा प्रस्तुत मत को तर्क की कसौटी पर न कसा जाय। वे चाहते हैं कि भारत के बहुसंख्यक समाज के आस्था के बिन्दुओं पर वे जब निराधार टिप्पणी करें तो देश उन्हें यथावत स्वीकार करे। उनकी धारणाओं और पूर्वाग्रहों को विवाद से परे माना जाय।

समस्या यह है कि यह बुद्धिजीवी जिस ढ़ांचे के भीतर रह कर विचार करने के लिये प्रशिक्षित हैं, भारत उस चौखटे में समा नही सकता। भारत एक राष्ट्र के रूप में चेतना के जिस धरातल पर जीता है, उसे समझने के लिये भारतीयता में अभिनिवेश चाहिये। इसके अभाव में पश्चिम के पैमाने पर भारतीय समाज के मूल्यों और आस्थाओं को कसना और निरर्थक बहस उत्पन्न करने का प्रयास निरंतर जारी रहता है।

इन बुद्धिजीवियों की सबसे बड़ी समस्या भारत राज्य और भारत राष्ट्र के अंतर को न समझ पाने की है। इसे समझने के लिये कोई गणितीय सूत्र नहीं बल्कि अनुभूति का वह धरातल चाहिये जहां भारतीय मूल्य आकार लेते हैं। भारत में रहने वाला समाज भारतभूमि को माता मानता है। आज से नहीं, हजारों वर्षों से। विष्णुपुराण कहता है कि समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में स्थित इस भू-प्रदेश का नाम भारत है और यहां के निवासी इसकी संतति हैं, जिन्हें भारती के नाम से पहचाना जाता है।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रैश्चेव दक्षिणम् । वर्ष तद्भारतंनामं भारती यत्र संतति ।।

हर वह तत्व जो जीवन देता है अथवा मानव जीवन के साथ जिसका गर्भनाल जैसा संबंध है उन सबको हमने माँ कह कर संबोधित किया है। साधारण व्याकरण में निहित स्त्री-पुरुष वाचक सम्बोधनों से परे यह भावनात्मक विषय है। भागीरथ ने तप किया, शिव की जटा से एक जल स्रोत फूट कर पृथ्वी पर अवतीर्ण हुआ और उसे इस देश ने माँ कहा - माँ गंगा। ब्रह्मा ने संकल्प किया - एकोहं बहुस्याम्। एक से अनेक होने की इस इच्छा के परिणाम से जो सृष्टि और प्रकृति उत्पन्न हुई, उसे भी हमने माँ कह कर संबोधित किया।

शिव अथवा ब्रह्म को हम पुरुष ही नहीं, परमपुरुष के रूप में मानते हैं। उस परम पुरुष से प्रकट होने वाले अवयव को हम माँ कहते तो इस व्याकरणीय संबंध के कारण नहीं अपितु अपने जीवन के साथ संबंध और उससे जुड़े हमारे विशिष्ट मनोभाव के कारण। लेकिन इसे समझने के लिये जो विशिष्ट भारतीय दार्शनिक अधिष्ठान चाहिये, उसका तो स्पर्श भी इन कथित बुद्धिजीवियों को असह्य है। इसलिये इन सतही प्रश्नों के दार्शनिक उत्तर उन्हें अपेक्षित ही नहीं हैं। हाँ, जब कोई उन्ही की तरह मूढ़ता भरे प्रतिप्रश्न करता है और प्रभु यीशु के कुमारी माँ से उत्पन्न होने अथवा कुरान की आयतों के फाजिल होने पर सवाल करता है तो वे बगलें झांकने लगते हैं।

वस्तुतः यह सभी प्रश्न आस्थाओं के प्रश्न हैं जिनकी तार्किकता के प्रश्न उठा कर समाज को तोड़ा जा सकता है, जोड़ा नहीं। भारत इसीलिये अनेक मान्यताओं और आस्थाओं के साथ एक रह सका है क्योंकि वह सभी की आस्थाओं का आदर करता रहा है। भविष्य की एकात्मता भी इसी में निहित है कि सभी की आस्थाओं को सम्मान मिले।

सभी की आस्थाओं को आदर देने का यह संस्कार भारतीय शिक्षा पद्धति का अंतर्निहित तत्व है। गत कुछ दशकों में शिक्षा को संस्कारों से काटे जाने का जो अभियान चला उसने परिसरों में वैमनस्य के बीच बोये। आज वही बीज वृक्ष बन कर राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के समक्ष प्रश्नचिन्ह उत्पन्न कर रहे हैं। प्रक्रिया कठिन और कष्टकारी तो है, पर असंभव नहीं। इससे भी बड़ी बात यह कि अगर हमें विश्वपटल पर अपनी राष्ट्रीय पहचान सुनिश्चित करनी है तो शिक्षा के भारतीयकरण का कोई विकल्प नहीं। शिक्षा का भारतीयकरण इन सारे प्रश्नों का एकमात्र उत्तर है। अभाविप इसके लिये होने वाले प्रत्येक सरकारी, सहकारी और सामाजिक प्रयास के समर्थन के लिये प्रतिबद्ध है।

देश के असली नायक भगत सिंह और हनुमंथप्पा...

अनुपम खेर ने पूछा- कन्हैया का भव्य स्वागत क्यों? वो ओलंपिक जीत कर आया है...?

जेएनयू में छात्रों को संबोधित करते अनुपम खेर, साथ में अशोक पंडित व अभाविप पदाधिकारी

नई दिल्ली। देश के विरोध में नारे लगाने वालों को कोई हीरो कैसे बना सकता है? आखिर किसी को हीरो बताने की परिभाषा क्या है? जो व्यक्ति देश के सम्मान में चार–चांद लगाये, उसकी रक्षा–सुरक्षा में अपना सर्वस्व लुटाये... वह देश का असली हीरो हैं। देश के असल हीरो भगत सिंह, सुखदेव–राजगुरू, सुभाषचंद्र बोस और हनुमंथप्पा जैसे लोग हैं। ना कि वो जो देश विरोधी गतिविधियों में शामिल हो और जेल से जमानत के तौर पर बाहर निकले और हीरो बनने की कोशिश करें।

उक्त बातें फिल्म अभिनेता अनुपम खेर ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा फिल्म 'बुद्धा इन ए ट्रैफिक जाम' की स्क्रीनिंग के आयोजन के दौरान कही। छात्रों से सवाल पूछते हुए अनुपम खेर ने कहा कि आखिर आजादी का मतलब है क्या? भारत माता की जय पर बहस क्यों हो रही है? क्या एक देशवासी के तौर पर हम अपनी सोच नहीं रख सकते? क्यों सिर्फ निजी स्वार्थ ही हमारा मकसद है? उन्होंने कहा कि ऐसे और भी कई सवाल हैं जो हमें खुद से पूछने चाहिए... और हमें आत्मचिंतन करना होगा कि हम अपने अंदर हिंदुस्तानी होने का भाव जिंदा रखना चाहते हैं कि नहीं। इस दौरान अभाविप के संगठन मंत्री सुनील आंबेकर, सह संगठन मंत्री श्रीनिवास और फिल्म निर्माता अशोक पंडित ने हजारों छात्रों को संबोधित किया।

खेर ने इस मौके पर मीडिया पर भी तंज कसा उन्होंने कहा कि 99 प्रतिशत लोग जो देश की बात करते हैं कैमरा उनकी ओर ना होकर जो एक व्यक्ति देश के विरोध में बात करता है उसकी ओर फोकस किया जाता है। हमारे लिए सबसे बड़ी बात है देश का निर्माण करना।

देश से नहीं देश में आजादी की बात.. वाले कन्हैया के भाषण का जिक्र करते हुए अनुपम खेर ने कहा, 'मैं देश को हमेशा अपने घर की तरह से देखता हूं। क्या आप ऐसा कह सकते हैं कि मुझे घर से नहीं घर में आजादी चाहिए। कुछ लोग जो यहां हैं, कहते हैं मेरे माता–पिता गरीब हैं उनके हालात को बदलने की जिम्मेदारी आपकी है। आप अपने घर के लिए और देश के लिए क्या कर रहे हैं। सवाल उठाना आसान है लेकिन जवाब ढूंढ़ना मुश्किल। अगर आप खड़े होकर यह कहते कि मैं देश के लिए यह करूंगा तो आपका कदम सराहना के लायक होता।'

अपनी फिल्म के विरोध के मुद्दे पर अनुपम खेर ने सवाल पूछते हुए कहा कि विश्वविद्यालय कैंपस पर बनी उनकी फिल्म 'बुद्धा इन ए ट्रैफिक जाम' फिल्म जेएनयू में क्यों नहीं दिखाई जा रही है। इस फिल्म में

जेएनयू जैसे कैंपस की जिंदगी दिखाने की कोशिश की गई है। क्या आप लोगों को लगता है कि इस फिल्म के जरिए जेएनयू का गलत चेहरा सामने आयेगा या फिर इस फिल्म के जरिए लोगों के सामने सच आ जायेगा।

खेर ने कन्हैया पर हमला करते हुए सवाल किया, 'तुम उन सभी चीजों के बारे में बात करते हो जो तुम्हारे अनुसार देश में गलत हैं। यद्यपि तुमने अपनी आलोचनाओं के अलावा देश के प्रति क्या योगदान दिया।' उन्होंने कहा कि 'चलो इस बारे में बात नहीं करते जो देश में नहीं हो रहा बल्कि उस बारे में बात करते हैं जो देश में हो रहा है। तुम यहां पर अध्ययन करने के लिए आये हो, राजनीति करने के लिए नहीं और यदि तुम राजनीति कर भी रहे हो तो देश के खिलाफ तो मत करो।

खेर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा करते हुए कहा, 'यह वर्षों बाद हुआ है कि हमें इतना अच्छा प्रधानमंत्री मिला है। हम इसके साथ ही आप सभी को क्रांति एवं देशभक्ति के मार्ग पर वापस लाने का प्रयास कर रहे हैं।' उन्होंने स्वयं को एक सच्चा भारतीय बताते हुए कहा, 'मेरे भीतर का भारत हमेशा जिंदा रहेगा। मैं बूढ़ा नहीं हूं। मैं अपने देश जैसा हूं जो समय के साथ युवा होगा।'

प्लास्टिक मुक्त सिंहस्थ कुंभ का आह्वान

केन्द्रीय कार्यसमिति बैठक में पोस्टर का लोकार्पण करते हुए अभाविप के पदाधिकारीगण

भोपाल। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा संचालित आयाम विकासार्थ विद्यार्थी (स्टूडेंट फॉर डेवलपमेंट – एसएफडी) ने उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ कुंभ को प्लास्टिक मुक्त रखने की योजना बनाई है। इसके लिए प्रकल्प ने सिहंस्थ यात्री व स्थानीय नागरिकों में जनजागृति कर वैज्ञानिक दृष्टि विकसित करने का काम किया जायेगा।

विकासार्थ विद्यार्थी के राष्ट्रीय संयोजक सचिन दवे ने बताया कि उनके द्वारा देश के 27 प्रातों में रचनात्मक गतिविधी चलाई जा रही है, जिसमें जल संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त अभियान, वृक्षारोपण, ऊर्जा संरक्षण अभियान, माँ नर्मदा प्रदूषण मुक्त अभियान, सामाजिक व पर्यावरण समस्या के सर्वे प्रमुख हैं। ऐसे में कुंभ में प्लास्टिक थैली प्रतिबंध हेतु जनजागरण, प्लास्टिक मुक्त सिंहस्थ के पम्पलेट वितरण करना, स्टिकर देना, कपड़े की थैली देना एवं सभी पंडालों में कपड़े के बैनर लगाने का प्रयास भी रहेगा। इसके अलावा, घाटों व मंदिरों में पोस्टर वितरण, मानव श्रृंखला, नुक्कड़ नाटक, प्रदर्शनी लगाकर जनजागृति का काम होगा।

अभियान में एसएफडी के सभी कार्यकर्ता विषेष टी शर्ट, बैच व कैप लगाकर सम्मिलित होंगे। जिस पर प्लास्टिक मुक्त सिंहस्थ का संदेश लिखा रहेगा। मध्यभारत और महाकोशल प्रांत के 55 जिलों से 20 हजार छात्र भी अभियान में सम्मिलित रहेंगे, जिनका लक्ष्य 50 लाख जन समुदाय से संपर्क कर प्लास्टिक प्रतिबंध की बात बताना होगा।

'लगातार बढ़ रही योग और आयुर्वेद की प्रासंगिकता'

अभाविप द्वारा मैसूर में किया गया द्वितीय मेडिविजन सम्मेलन का आयोजन

मेडिविजन सम्मेलन में मंचासीन अतिथि

मैसूर। चिकित्सा क्षेत्र में मिली शानदार उपलब्धि और चिकित्सा जगत की सकारात्मक प्रतिक्रिया से उत्साहित होकर द्वितीय मेडिविजन सम्मेलन का सफल आयोजन जेएसएस मेडिकल कॉलेज, मैसूर में किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य देश भर के चिकित्सा एवं दंत चिकित्सा के छात्रों को एक मंच पर लाना और एक साथ उनकी शैक्षिक एवं नवीन मुद्दों पर चर्चा कराने का अवसर प्रदान करना था। इस दो दिवसीय सम्मेलन के कुल आठ सत्रों में देश भर से एक हजार के करीब मेडिकल के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

स्वामी विवेकानंद के चरित्र से प्रेरित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का यह मानना है कि युवा शक्ति किसी राष्ट्र के भाग्य को परिवर्तित करने में प्रबल सहायक होती है। अभाविप ने छात्र आंदोलनों को जीवंत कर राष्ट्र पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं संस्कृतिक मोर्चों पर विद्यार्थियों के बीच स्थापित किया है।

चिकित्सा के छात्र समाज के श्रेष्ठ घटकों में से एक होने के साथ राष्ट्र को स्वस्थ एवं समर्थ बनाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। अभाविप चिकित्सा क्षेत्र के माध्यम से स्वास्थ्य एवं राष्ट्रीय भावना के बीच एक सामंजस्य स्थापित कर राष्ट्रीय चिंतन की परंपरा को नई रोशनी प्रदान करने का कार्य कर रही है।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए डॉ. आर. बाला सुब्रमण्यम ने भारतीय चिकित्सा पद्धति पर विशेष जोर देते हुए मेडिकल क्षेत्र मे भारतीय चिकित्सा की सम्भावनाओं एवं उसकी प्रसंगिकता के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि बहुत से पश्चिमी देश योग और आयुर्वेद को बड़ी तेजी से अपना रहे हैं, वहीं हम इसे भूलते जा रहे हैं। हमें योग और आयुर्वेद को अपने दैनिक जीवन में समाहित करना होगा। वहीं, उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. बी. एन. गंगाधर ने कहा कि विकराल रूप से बढ़ते हुए रोगों को भारतीय चिकित्सा पद्धति के माध्यम से ही रोका जा सकता है। अतः चिकित्सा का भारतीयकरण होना परम आवश्यक है।

सम्मेलन के एक अन्य सत्र को सम्बोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री अनंत कुमार ने कहा कि देश की बढ़ती जनसंख्या के हिसाब से वर्तमान में एक हजार मेडिकल एवं 500 डेंटल कॉलेज की जरूरत है। उन्होंने बताया कि चिकित्सा अध्ययन के क्षेत्र में भारत का स्थान तीसरा है तथा प्रत्येक पांच में से एक मेडिकल कंपनी भारत की है। ऐसे में औषधी के विकास के लिए देश में एक अलग मंत्रालय की जरूरत है। इस दौरान, देश भर से आये प्रतिनिधियों को प्रेरित करते हुए डॉ. थिमप्पा हेगड़े ने बताया कि आध्यात्मिकता और योग का समावेश ही हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचा सकता है।

अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने अपने उद्बोधन में चिकित्सा क्षेत्र में नए रचनात्मक प्रयोगों के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य जीवन के प्रसार की बात करते हुए कहा कि नए खोज और आविष्कारों के बीच हमें अपने मूल से भी जुड़े रहना होगा। ताकि पुरातन काल की औषधीय विद्या का भी वर्तमान में उपयोग हो सके। ■

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के स्वर्णिम सौ वर्ष

✍ आकाश कुमार राय

काशी हिंदू विश्वविद्यालय की गणना देश के अव्वल विश्वविद्यालयों में होती है। यही मान और रुतबा का.हि.वि.वि. की सौ वर्ष की कमाई है, जो आज अपनी शताब्दीपूर्ति समारोह मना रहा है।

देश के अति–प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (का.हि.वि.वि.) की स्थापना महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी द्वारा सन् 1916 में की गयी थी। इस स्वायत्तशासी उत्कृष्ठ संस्था के कुलाध्यक्ष (विजिटर) भारत के महामहिम राष्ट्रपति हैं। इस संस्था को एशिया का सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय होने का भी गौरव हासिल है। पं. मदन मोहन मालवीय, डॉ. एनी बेसेंट एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन् जैसे मनीषियों की दूरदर्शिता का जीवन्त प्रतीक यह राष्ट्रीय संस्थान प्राचीन भारतीय ज्ञान–विज्ञान एवं आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन दृष्टि का एक अद्भुत संगम है। शिक्षा की समग्र और पवित्रतामूलक पद्धति को नूतन आयामों से जोड़कर यह विश्वविद्यालय युवा वर्ग की सृजनात्मक प्रतिभा का संपोषण कर रहा है। संस्था के यशस्वी कुलपतियों में महामना मालवीय जी, सर सुन्दर लाल, डॉ. एस. राधाकृष्णन् एवं आचार्य नरेन्द्र देव जैसे महापुरुष रहें, जिन्होंने महान विश्वविद्यालय का नेतृत्व किया।

महामना मदन मोहन मालवीय ने राष्ट्रीय संस्कारों को रोपने के लिए काशी हिंदू विश्वविद्यालय (का.हि.वि.वि.) की स्थापना की थी। महामना ने

जब यह संकल्प किया, तब उनके पास पर्याप्त धन नहीं था। उन्होंने इसके लिए राजा–महाराजाओं और धनिकों से धन लेने का निश्चय किया। तमाम नवाबों को इस विश्वविद्यालय के नाम में 'हिन्दू' शब्द के प्रयोग पर आपत्ति थी, मगर महामना डटे रहे। उनकी तर्कशीलता, समर्पण और व्यक्तित्व का करिश्मा ही था कि वह हैदराबाद के निजाम से भी धन निकलवाने में कामयाब रहे। अर्द्धचंद्राकार आकृति में बना यह 1300 एकड़ का विश्वविद्यालय महामना के सपनों की सफल उपज है।

महामना की इच्छाशक्ति, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और संघर्ष के बीच सृजन के बीज बोने की लालसा ने का.हि.वि.वि. को उस मुकाम की ओर बढ़ाया, जिसकी वजह से आज यह दुनिया के प्रतिष्ठित संस्थानों में शामिल है। यही मान और रुतबा का.हि.वि.वि. की सौ वर्ष की कमाई है, जो आज अपनी शताब्दीपूर्ति समारोह मना रहा है। विश्वविद्यालय सपनों से उपजते हैं और अपने छात्रों के मन में सपने उपजाते हैं। ऐसे में राष्ट्र सरोकार के सपनों को युवा मन में रोपित करने के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने जब आकार लिया, तो जरूरत पड़ी विद्वानों की। महामना ने खुद विभिन्न विषयों के विद्वानों के दरवाजे खटखटाए। प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष पद के लिए उन्होंने डॉक्टर ए. एस. अलतेकर से बात की। कहते हैं कि प्रोफेसर अलतेकर तब पुणे नहीं छोड़ना चाहते थे, पर महामना की जिद के आगे जब निजाम की नहीं चली, तो अलतेकर साहब तो भावुक विद्वान थे। उन्हें आना पड़ा। आज जब शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है, तब इस महान विश्वविद्यालय की शताब्दी हमें अपने अंदर झांकने पर मजबूर करती है।

चार फरवरी, 1916 को आयोजित स्थापना समारोह में मोहनदास करमचंद गांधी के शब्द थे– 'मुझे हैरानी हो रही है कि ये जो कार्यक्रम चल रहा है, इसकी अध्यक्षता के लिए हम विदेशी भाषा का इस्तेमाल क्यों कर रहे हैं? इस कार्यक्रम को चलाने के लिए हम अंग्रेजी की जगह हिंदी में क्यों नहीं बोल सकते?.. मैं यहां मौजूद राजा–महाराजाओं की शान–ओ–शौकत देखकर हैरान हूं। भारत तब तक मुक्त नहीं हो सकता, जब तक कि आप लोग खुद को कीमती गहनों के भार से मुक्त करके देशवासियों के भरोसे को जीत नहीं लेते।' गांधी जी के शब्दों से आहत होकर आभूषणों से लदे तमाम राजा–महाराजा कार्यक्रम छोड़ कर चले गए। उसी लम्हे तय हो गया कि यह विश्वविद्यालय अनुग्रहीत होगा, पर अपने आदर्श नहीं छोड़ेगा। अनुदान लेगा, पर अपने आचार–विचार नहीं छोड़ेगा। नए विचारों से प्रेरणा लेगा, पर अंधों की तरह उनका अनुकरण नहीं करेगा।

स्थापना समारोह में अपने संबोधन में महामना ने कहा था– 'भारत सिर्फ देश नहीं बल्कि नागरिकों के संगठित सोच के साथ विकास के पथ पर अग्रसर शक्ति है। देश तभी विकास और शक्ति प्राप्त कर सकता है, जब विभिन्न समुदाय के लोग परस्पर प्रेम और भाईचारे के साथ जीवन व्यतीत करेंगे। बेहतर शिक्षा और आपसी सद्भाव के पोषक के रूप में यह केंद्र जो अस्तित्व में आ रहा है, वह ऐसे छात्र प्रदान करेगा, जो बौद्धिक रूप से न केवल संसार के दूसरे श्रेष्ठ छात्रों के बराबर होंगे, बल्कि उनसे भी श्रेष्ठतम

जीवन व्यतीत करेंगे। वे अपने देश से प्यार करेंगे और परमपिता के प्रति ईमानदार रहेंगे।' वर्तमान में जब जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) की घटनाओं पर देश बंटा हुआ दिख रहा है, ऐसे में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के छात्रों की शिक्षा और उनकी सोच पर हर कोई गर्व से कह सकता है कि का.हि.वि. वि. ने कभी देश के जनमानस को चोट पहुंचाने वाला रास्ता नहीं चुना। यहां अखंड भाईचारे की भावनात्मक सदानीरा सदैव युवाओं के मन–मस्तिष्क में बहती रहती है। गंगा–सी पावन इस भावनात्मक तरलता के भगीरथ महामना ही हैं।

का.हि.वि.वि. के छात्रों और अध्यापकों ने देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपराष्ट्रपति, उपप्रधानमंत्री, शिक्षामंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मुख्य न्यायाधीश और उप कुलपति जैसे पद संभाले हैं। साहित्यकार, उद्योगपति, उद्यमी, प्रशासक, अर्थशास्त्री, इतिहास व संविधानविद्, लाइब्रेरी साइंटिस्ट और धर्मशास्त्री के अलावा विश्वविद्यालय ने देश को शीर्ष वैज्ञानिक और विशेषज्ञ भी दिए हैं। जिनमें कुछ ने इसरो (ISRO), ओएनजीसी (ONGC), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) एवं सीएसआईआर व आईसीएआर के मुखिया के पद संभाले। विश्वविद्यालय के विश्वख्याति कमाने वाले छात्रों में इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस जैसे पश्चिमी देशों के ही नहीं, पाकिस्तानी विद्यार्थी भी हैं। बी. पी. कोइराला तो नेपाल के प्रधानमंत्री भी रहे हैं। काशी हिंदू विश्वविद्यालय ऐसी पहली संस्था है, जिसे एक नहीं, तीन 'भारतरत्न' देने का गौरव प्राप्त है– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, सी. एन. आर. राव और खुद महामना मदन मोहन मालवीय। मैगसेसे, पद्म, ज्ञानपीठ, कालिदास, साहित्य, संगीत नाटक अकादमी, शांतिस्वरूप भटनागर और दादा साहब फालके जैसे पुरस्कार विजताओं की तो यहां बहार है।

देश के वर्तमान हालातों और जरूरतों के ध्यान में रखते हुए काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने अपनी उपयोगिता को लेकर भी सदैव सजग रही है। तभी तो संस्थान के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर महामना के सपने को साकार करने के मकसद से बीएचयू ने विकास की कई परियोजनाएं तैयार की हैं। जिनमें शैक्षिक, सामजिक, राजनीतिक, आर्थिक सभी पक्षों का ध्यान रखा गया है। इन्ही योजनाओं में सौर ऊर्जा पार्क की स्थापना के साथ जलवायु परिवर्तन केंद्र समेत कई परियोजनाएं शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश चंद्र त्रिपाठी ने बताया कि विश्वविद्यालय ने सौर ऊर्जा पर काम करने का फैसला किया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के दक्षिणी परिसर के ढाई एकड़ परिक्षेत्र में सौर ऊर्जा पार्क की स्थापना की जाएगी। का.हि.वि.वि. में बिजली की कुल खपत 20 मेगावॉट है जबकि सौर ऊर्जा पार्क बनने पर यहां 150 मेगावॉट बिजली का उत्पादन होगा। इसके जरिए वाराणसी और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों को भी रोशन किया जा सकेगा। वहीं, पर्यावरण एवं पूरे देश में जलवायु परिवर्तन की समस्या को लेकर का.हि.वि.वि. में जलवायु परिवर्तन अध्ययन केंद्र की स्थापना होगी। इस योजना का वित्त पोषण प्रधानमंत्री द्वारा किया जाएगा। ■

सिक्कों-स्टांप पर दिखेगी काशी की झलक

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के फरवरी 2016 में 100 वर्ष पूरे होने पर यहां के छात्रों ने 10 रुपये का सिक्का और 100 व 500 का स्मारक डाक टिकट (स्टांप) डिजाइन किया है। जिसे आने वाले समय में भारत सरकार की फाइनेंस मिनिस्ट्री की स्वीकृति के बाद जारी किया जायेगा। स्टांप पर जहां सर्वविद्या की राजधानी दिखाई देगी, वहीं महामना के साथ गंगा घाट भी दिखाई देंगे।

'युवा ही ला सकते हैं समाज में बदलाव'

हमीरपुर में आयोजित अभाविप का प्रान्तीय छात्रा सम्मेलन

मंच पर उपस्थित अभाविप पदाधिकारी व छात्राएं

हमीरपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् भारत में हर दिन महिला सम्मान की तरह ही मनाती है। युवाओं में सकारात्मक परिवर्तन से समाज में परिवर्तन करना विद्यार्थी परिषद् सिखाती है। परिषद् का मानना है कि युवा ही समाज में बदलाव ला सकता है। यह बातें अखिल भारतीय छात्रा प्रमुख ममता यादव ने हमीरपुर में आयोजित प्रांतीय छात्रा सम्मेलन में कहीं। सम्मेलन में प्रदेशभर से करीब 1500 छात्रों ने भाग लिया।

जेएनयू प्रकरण पर भी अपने विचार रखते हुए ममता यादव ने कहा कि इस घटना से देश शर्मसार हुआ है। इस तरह की गतिविधियों में शामिल छात्रों को चाहिए कि वो अपनी संस्कृति को समझे और अपनाये। उन्होंने छात्राओं से भी राष्ट्र यज्ञ में अपना योगदान देने का आह्वान किया।

सम्मेलन की मुख्य अतिथि राजस्थान महिला कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष मनन चतुर्वेदी ने कहा कि महिलाओं को अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। इसके बावजूद वर्तमान में महिलाओं के नेतृत्व में देश प्रगति के पथ पर अग्रसर है। वहीं, उन्होंने जेएनयू प्रकरण पर कहा कि राष्ट्रविरोधी ताकतों के खिलाफ भी देश की महिलाएं समाज के हर वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलकर खड़ी हैं। उन्होंने माना कि जेएनयू की घटना से राष्ट्र की अखंडता तथा एकता को चोट पहुंची है।

विशिष्ट अतिथि अभिनेत्री ओसीन बराड़ ने कहा कि आज की महिला को अपनी इच्छा शक्ति को उजागर करने की आवश्यकता है तथा उसी इच्छा शक्ति के बल पर प्रगति के नये आयाम स्थापित कर सकती हैं। बराड़ ने देश की हर महिला खासकर छात्राओं से अपने अस्तित्व की लडाई को जारी रखने की भी अपील की।

देश विरोधी ताकतों को उखाड़ फेंकेगी युवा पीढ़ी

सम्मेलन में अपने संबोधन में दिल्ली प्रांत की उपाध्यक्षा ममता त्रिपाठी ने कहा कि देश विरोधी ताकतों को उखाड़ फेंकने में युवा पीढ़ी की भूमिका अहम रहेगी। इसके लिए अभाविप लगातार युवाओं में देशप्रेम की भावना का संचार करने की दिशा में प्रयासरत है।

उन्होंने कहा कि जेएनयू में जिस तरह देश विरोधी गतिविधियां संचालित करने का प्रयास किया गया वह दुर्भाग्यपूर्ण है। जेएनयू में पिछले तीन वर्षों से इस तरह गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा था। जिसका अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के हर कार्यकर्ता ने विरोध किया था। मगर दूसरी विचारधारा के लोगों ने राष्ट्र के खिलाफ ऐसी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए ऐसे कई कार्यक्रम आयोजित किए जो देश हित में नहीं थे।

ममता त्रिपाठी ने कहा कि जेएनयू में अफजल गुरू के नाम पर शहीदी दिवस मनाना और उन्हें अफजल जी कहना देश के साथ गद्दारी करने के समान है। उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर हमला बोलते हुए कहा कि अभाविप उनके इस तरह के राष्ट्र विरोधी ताकतों का साथ देने के लिए खेद व्यक्त करती है।

'देशद्रोही गतिविधियां अमन-चैन के लिए खतरा'

रांची में 'राष्ट्रवाद और युवा' विषय पर आयोजित परिचर्चा

परिचर्चा को संबोधित करते सेवानिवृत्त कर्नल संजय सिंह

रांची। सेना सरहद पर पहरा देती है, तो देशवासी चैन से सो पाते हैं। सैनिक अपनी जान की कुर्बानी देकर देश की सेवा करते हैं तभी यहां अभिव्यक्ति की आजादी पर बहस होती है। वामपंथी विचारधारा के रहनुमाओं को पांच दिन सियाचीन में रहने का आदेश हो तो इनकी देशद्रोही गतिविधियां स्वतः समाप्त हो जायेंगी। जेएनयू में जिस तरह देश विरोधी नारे लगाए गए वो देश के अमन–चैन के लिए खतरा है।

उक्त बातें सेवानिवृत कर्नल संजय सिंह ने केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची में "राष्ट्रवाद और युवा, सेना, सरहद एवं शैक्षणिक संस्थान" विषय पर अभाविप के "थिंक इंडिया" द्वारा आयोजित परिचर्चा में कही। परिचर्चा में बतौर मुख्य अतिथि अपने अनुभवों को साझा करते हुए कर्नल सिंह ने बताया कि किस प्रकार भारतीय सेना अपने जान की बाजी लगाकर देश की रक्षा में तत्पर रहती है। उन्होंने युवाओं से आह्वान करते हुए कहा कि वो अधिकाधिक संख्या में सेना से जुड़कर देश की रक्षा पंक्ति को मजबूत करें।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता और दिल्ली विश्वविद्यालय के आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज के सहायक प्राध्यापक अमित सिंह ने वामपंथी विचारधारा के राष्ट्रद्रोह के विचार के रूप में परिवर्तित होने की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जेएनयू परिसर में राष्ट्रविरोधी नारे लगना या अफजल गुरु की बरसी मनाना कोई नई बात नहीं है। हां, यह जरूर हुआ कि पहली बार सच्चाई देश के लोगों के सामने आई। उन्होंने कहा कि मैं भी जेएनयू का छात्र रहा हूं, वहां हमने दस साल गुजारे हैं और जेएनयू छात्र संघ का दो बार काउंसलर भी रहा हूं। इसलिए जेएनयू के छात्र होने के नाते मुझे वहां के अंदरूनी सच्चाई के बारे में पता है। वहां आतंकवादियों व नक्सलियों के पक्ष में नारे लगते हैं। वहां वामपंथी विचारधारा से जुड़े शिक्षक हैं, जो राष्ट्रविरोधी विचारधारा को हवा देते हैं और विद्यार्थिओं को उकसाते हैं। जेएनयू जैसे विश्वविद्यालय में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को हत्यारा कहा गया, क्योंकि उन्होंने परमाणु बम बनाया था।

वहीं अभाविप के प्रांत संगठन मंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि आखिर वामपंथी विचारधारा से जुड़े छात्र किस प्रकार की आजादी चाहते हैं। भारत को गाली देना किस प्रकार की आजादी है। देश के प्रति सोचने और बौद्धिक आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने के लिए युवाओं को आगे आना होगा। ■

प्रखर राष्ट्रवादी डॉ. भीमराव आंबेडकर

✍ संजीव कुमार सिन्हा

डॉ. भीमराव आंबेडकर का व्यक्तित्व बहुत विराट् था। वे एक विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक तो थे ही, साथ ही प्रखर राष्ट्रवादी भी थे। उनके विचार भारतीयता से ओत–प्रोत थे। वे सामाजिक एकता को राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक मानते थे। बाबा साहब ऐसा समाज चाहते थे जिसमें सामाजिक व आर्थिक असमानता न हो और इसके लिए उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन संघर्ष में बिता दिया। उनका नजरिया व्यापक था। दुर्भाग्य से उनके बारे में एक धारणा बना दी गई कि वे केवल वंचितों के मसीहा थे, यह उनके समग्र योगदान को देखते हुए उनके साथ न्याय नहीं है। वे किसी वर्ग विशेष की नहीं परंतु समस्त भारतीय जन की आवाज थे। अखंड भारत, अनुच्छेद 370 का विरोध, समान नागरिक संहिता का समर्थन, देश की राजभाषा संस्कृत हो, आर्य बाहर से नहीं आए थे, धर्म में अटूट विश्वास जैसे अनेक ऐसे राष्ट्रीय मुद्दे हैं, जिन पर व्यक्त उनके विचार यह सिद्ध करते हैं कि उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि था।

राष्ट्रप्रेम : डॉ. आंबेडकर का दृढ़ मत था कि मैं हिंदुस्तान से प्रेम करता हूं। मैं जीऊंगा तो हिंदुस्तान के लिए और मरूंगा तो हिंदुस्तान के लिए। मेरे शरीर का प्रत्येक कण और मेरे जीवन का प्रत्येक क्षण हिंदुस्तान के काम आए, इसलिए मेरा जन्म हुआ है। उनके अनुसार, जब तक सामाजिक समरसता का भाव पूर्णतः राष्ट्र में उत्पन्न नहीं होगा तब तक राष्ट्रवाद की स्थापना नहीं हो पाएगी।

डॉ. आंबेडकर का मानना था कि राष्ट्रवाद तभी औचित्य ग्रहण कर सकता है जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग के अंतर को भूलकर उनमें सामाजिक भ्रातृत्व की भावना को सर्वोच्च स्थान दिया जाए। (डॉ. अंबेडकर संपूर्ण वांड्य, खंड 5)

बाबा साहब के जीवनी लेखक स्वर्गीय श्री सी. बी. खैरमोड़े ने उनके शब्दों को उद्धृत किया है, जो उनके प्रखर राष्ट्रवादिता का परिचायक है– "मुझमें और सावरकर में इस प्रश्न पर न केवल सहमति है बल्कि सहयोग भी है कि हिंदू समाज को एकजुट और संगठित किया जाये, और हिंदुओं को अन्य मजहबों के आक्रमणों से आत्मरक्षा के लिए तैयार किया जाए।" (ब्लिट्ज, 15 मई, 1993)

9 दिसंबर 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक में बाबा साहेब ने कहा, "इस देश का सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक उत्थान आज नहीं तो कल होगा ही, इस बारे में मुझे जरा भी संदेह नहीं है। आज सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से हम एक–दूसरे से अलग हो गए हैं, यह मैं जानता हूं, अभी हम एक–दूसरे से लड़ रहे हैं। लड़नेवाली एक छावनी का मैं भी एक नेता हूं। ऐसा हुआ तो भी उचित समय और उचित परिस्थिति आते ही यह विशाल देश एक हुए बिना कभी नहीं रहेगा। दुनिया की कोई भी ताकत उसकी एकता में आड़े नहीं आ सकती। इस देश में इतने पंथ और इतनी जातियां होने के बावजूद किसी न किसी तरह हम सारे लोग इकट्ठा होंगे ही, इस बारे में मेरे मन में जरा भी संशय नहीं है।"

बाबासाहब ने 1916 में कोलंबिया विश्वविद्यालय में 'कास्ट इन इंडिया' प्रबंध प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने लिखा, "भारत में सर्वव्यापी सांस्कृतिक एकता है। यद्यपि समाज अनगिनत जातियों में बंटा है फिर भी वह एक संस्कृति से बंधा हुआ है।"

संविधान सभा में 5 फरवरी 1950 को दिया गया उनका भाषण विचारशील है। उन्होंने कहा था, "भारत शताब्दियों बाद स्वाधीन हुआ है। अब इस स्वराज्य की रक्षा हमारा प्रथम कर्तव्य है। अपने समाज में किसी प्रकार की फूट पुनः हमसे स्वराज्य को छीन लेगी। शताब्दियों की गुलामी के परिणामस्वरूप हमसे कुछ विकृतियां, ऊंच–नीच भेद, आर्थिक विषमता, पिछड़ापन, जातिवाद आदि उत्पन्न हुए हो सकते हैं,

परंतु इसे अपना हथियार बनाकर कोई विदेशी हमारे स्वत्वों का अपहरण करना चाहेंगे तो हम उसे सहन नहीं करेंगे। हम उनकी यह आकांक्षा मिट्टी में मिला देंगे। यह हमारा घरेलू मामला है, इसलिए हम इससे आपस में निबटेंगे। अपने लाभ मात्र या सामाजिक दृष्टि से अवनत स्थिति से निकलने की इच्छा से हम किसी विदेशी के हस्तक नहीं बनेंगे। हमें अपने में उत्पन्न होनेवाले जयचंदों से सावधान रहना होगा। अपने जिस राष्ट्र एवं समाज के हम अंग–उपांग है, उसके हित को ठीक प्रकार से पहचानें।''

अखंड भारत : डॉ. आंबेडकर अखंड भारत के समर्थक थे। उनका मानना था कि हममें इतने जाति–पंथ हैं, तो भी इसमें कोई संदेह नहीं कि हम एक ही समुदाय हैं। भारत के विभाजन के लिए यद्यपि मुसलमानों ने लड़ाई की तो भी आगे कभी एक दिन उन्हें अपनी गलती महसूस होगी और उनको लगेगा एक 'अखंड भारत' ही हमारे लिए अच्छा है।

> ''मैं इन तमाम वर्षों में हिंदू समाज और इसकी अनेक बुराइयों पर तीखे एवं कटु हमले करता रहा हूं, लेकिन मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि अगर मेरी निष्ठा का उपयोग बहिष्कृत वर्गों को कुचलते के लिए किया जाता है तो मैं अंग्रेजों के खिलाफ हिंदुओं पर किए हमले की तुलना में सौ गुना तीखा, तीव्र एवं प्राणांतिक हमला करूंगा।''
>
> – डॉ. भीमराव आंबेडकर, महार मांग वतनदार सम्मेलन, सिन्नर(नासिक) 16 अगस्त, 1941

संविधान सभा के प्रथम अधिवेशन में 17 दिसंबर 1946 का वक्तव्य उनके प्रखर राष्ट्रवादी व्यक्तित्व का दर्शन कराता है। उन्होंने कहा था, 'आज मुस्लिम लीग ने भारत का विभाजन करने के लिए आंदोलन छेड़ा है, दंगे फसाद शुरू किए हैं, लेकिन भविष्य में एक दिन इसी लीग के कार्यकर्ता और नेता अखंड भारत के हिमायती बनेंगे, यह मेरी श्रद्धा है। भारत की अधिकांश सेना में जिन रियासतों ने भारत विरोधी षड्यंत्र करने की पहल की है, अतिरिक्त क्षेत्रीय निष्ठा दिखाई है, उनके दुष्ट प्रयासों का स्वतंत्र भारत के शासकों द्वारा पूरी तरह से कुचलना चाहिए।''

अनुच्छेद 370 का विरोध : डॉ. आंबेडकर अनुच्छेद 370 को राष्ट्रीय एकता में बाधक मानते थे। उन्होंने इस अनुच्छेद पर संविधान सभा की बहस में विरोध किया था। जब पं. जवाहरलाल नेहरू के सुझाव पर शेख अब्दुल्ला डॉ. आंबेडकर के पास गए तो उन्होंने यह कहकर शेख को उल्टे पांव लौटा दिया, ''आप चाहते हैं कि भारत कश्मीर में सीमाओं की रक्षा करे, सड़कें बनाए, खाद्यान्न की आपूर्ति करे और कश्मीर को भारत के साथ समान दर्जा मिले लेकिन प्रशासनिक क्षेत्र में भारत को न्यूनतम अधिकार हो। ऐसा स्वीकार करना देश के साथ धोखा होगा और एक कानून मंत्री के रूप में मैं ऐसा कदापि नहीं करूंगा।''

समान नागरिक संहिता का समर्थन : बाबा साहब आंबेडकर संपूर्ण देश के लिए समान नागरिक संहिता लागू करना चाहते थे। 23 नवंबर 1948 को संविधान सभा में दिए गए भाषण में उन्होंने कहा, ''... मेरे मित्र श्री हुसैन इमाम ने पूछा है कि क्या भारत जैसे विशाल देश के लिए एक समान नागरिक संहित का होना संभव और वांछनीय होगा? अब मुझे स्वीकार करना होगा कि इस सीधी–सी बात के कारण मुझे घोर आश्चर्य है कि इस देश में मानवीय संबंधों के लगभग हर पक्ष को अपनी सीमा में लिए हुए पहले ही एक समान विधि संहिता है। हमारे पास एक पूरी अपराध संहिता है जो पूरे देश में चलन में है और जो दंड संहिता और क्रीमिनल प्रोसीजर कोड में समाहित है। हमारे पास संपत्ति हस्तांतरण कानून है जो संपत्ति से जुड़े संबंधों का नियमन करता है और जो पूरे देश में चलन में है।.....मैं ऐसे असंख्य कानूनों का हवाला दे सकता हूं जो यह साबित करेंगे कि इस देश में व्यावहारिक रूप में एक समान नागरिक संहिता है। जिसकी अंतर्वस्तु समान है

और जो पूरे देश में लागू है। केवल एक क्षेत्र ऐसा है जिस पर दीवानी कानूनी अब तक अपनी पकड़ नहीं बना पाया है और वह है विवाह और उत्तराधिकार।"

इस मुद्दे पर बहस के दौरान कुछ मुस्लिम सदस्यों द्वारा यह आशंका प्रकट करने पर कि समान नागरिक संहिता का प्रावधान मुसलमानों के विरुद्ध है, डॉ. आंबेडकर ने इस आशंका को निर्मूल करार देते हुए कहा था, "मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी मुसलमान को कभी भी यह कहने का अवसर नहीं मिलेगा कि समान नागरिक संहिता के निर्माताओं ने मुस्लिम समुदाय की भावनाओं को भारी आघात पहुंचाया है।"

भारत की राजभाषा संस्कृत हो : संस्कृत की वैज्ञानिकता को ध्यान में रखकर ही डॉ. भीमराव आंबेडकर ने भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में संस्कृत का समर्थन किया। उन्होंने 10 सितंबर 1949 को डॉ. बी. वी. केसकर और नजीरूद्दीन अहमद के साथ मिलकर संस्कृत को भारतीय संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए संविधान सभा में एक संशोधन प्रस्तुत किया था, परंतु दुर्भाग्यवश वह संशोधन पारित नहीं हो सका। यह सर्वविदित है कि संविधान–सभा में जब राजभाषा को लेकर चर्चा हो रही थी तो डॉ. आंबेडकर व पंडित लक्ष्मीकांत मैत्र ने संस्कृत में धाराप्रवाह वार्तालाप किया।

आर्य बाहर से नहीं आए थे : डॉ. आंबेडकर आर्य आगमन को लेकर विदेशी आक्रमणकारी होने के सिद्धांत को नकारते हैं। उनके शब्दों में, "आर्यों को विदेशी प्रजाति और भारत पर उनके आक्रमण का सिद्धांत मात्र एक मान्यता और धारणा है, इससे अधिक कुछ भी नहीं।" वे अपने विश्लेषण के उपरांत यह लिखते हैं, "कहना न होगा कि पाश्चात्य लेखकों ने आर्य प्रजाति का जो सिद्धांत दिया है वह हर तरह से धराशायी हो गया है। यह सिद्धांत वैज्ञानिक अनुसंधान का विकृत रूप है। इसे तथ्यों पर आधारित नहीं किया गया। इसके विपरीत यह सिद्धांत पूर्वकल्पित है और तथ्यों का चयन उसे प्रमाणित करने के लिए किया गया है।"

धार्मिक व्यक्तित्व : डॉ. आंबेडकर धर्म को आवश्यक मानते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि धर्म व अध्यात्म से ही शील पनपता है। मार्क्सवाद धर्महीनता के कारण उन्हें पसंद नहीं आता था। डॉ. आंबेडकर कहते थे, "मैं धर्म पर विश्वास रखता हूं। धर्म के मूल्यों के बिना समाज का संघर्ष केवल ईर्ष्यालु व सत्तालिप्सु लोगों का एक क्षुद्र संघर्ष बन जाएगा। धर्म आशा देता है, विश्वास देता है, व्यवस्था देता है, अनुशासन देता है।" भगवद्गीता के विषय में वे कहते हैं, "गीता मेरे सत्याग्रह की प्रेरणा का स्रोत है।"

बौद्ध धर्म अंगीकार : बाबा साहब वंचितों की दयनीय दशा को बदलना चाहते थे। जब उन्होंने हिंदू धर्म छोड़ने का निश्चय किया तो क्रिश्चियन एवं इस्लामी जगत के नामचीन लोग उन्हें अपने पक्ष में करने के लिए उनके पीछे पड़ गए। उन्हें ढेरों धन–दौलत का लालच भी दिया गया। तब उन्होंने कहा, "मैं हिंदू धर्म छोड़ दूंगा, परंतु मैं ऐसे धर्म को अंगीकार करूंगा, जो हिंदुस्तान की धरती पर ही जनमा हो। मुझे ऐसा ही धर्म स्वीकार है, जो विदेशों से आयात किया हुआ नहीं हो। इसी कारण मैं बौद्ध धर्म अंगीकार करता हूं।"

13 अक्टूबर 1956 को नागपुर में बौद्धमत में दीक्षा लेने से एक दिन पूर्व डॉ. आंबेडकर ने एक संवाददाता सम्मलेन में कहा कि एक बार उन्होंने गांधीजी को कहा था कि यद्यपि वे उनसे छुआछूत मिटाने के प्रश्न पर मतभेद रखते हैं, पर समय आने पर "मैं वही मार्ग चुनूंगा जो देश के लिए सबसे कम हानिकर हो। मैं बौद्धमत में दीक्षित होकर देश को सबसे बड़ा लाभ पहुंचा रहा हूं, क्योंकि बौद्धमत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। मैंने सावधानी बरती है कि मेरे पंथ–परिवर्तन से इस देश की संस्कृति और इतिहास को कोई हानि न पहुंचे।" (धनंजय कीर–कृत "आंबेडकर : जीवन और लक्ष्य", पृ. 498)

डॉ. आंबेडकर के कर्तृत्व का संपूर्णता में आकलन करे तो हम पाएंगे कि वे प्रखर देशभक्त और राष्ट्रवादी थे। उनके बारे में समग्रता से निरंतर अध्ययन करने और उनकी राष्ट्रीय दृष्टि को उभारने की आवश्यकता है। ■

राष्ट्रद्रोह के खिलाफ देश एकजुट...

दोषियों को सजा दिलाने के लिए अभाविप प्रयासरत

नई दिल्ली। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में नौ फरवरी को आयोजित कार्यक्रम में देश विरोधी नारे लगने के बाद से पूरे देश में बड़ा विवाद खड़ा हुआ। एक ओर राष्ट्र की गरिमा और देशद्रोहियों को सजा दिलाने को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् और अन्य राष्ट्रवादी ताकतें लामबंद हुई। तो वहीं कुछ राजनीतिक पार्टियां इस मुद्दे पर भी अपनी राजनीति चमकाने का अवसर तलाशने में लगी रही। मगर आरोपियों की पहचान और मामले की जांच को लेकर पुलिस–कानून और न्याय व्यवस्था पूरी तरह से चौकस रही। इस बीच पूर्व सैनिकों, कुछ बड़ी हस्तियों और अन्य संगठनों ने भी जेएनयू की घटना को देश की संप्रभुता पर धब्बा बताते हुए उसका विरोध किया।

जेएनयू विवाद को लेकर जहां अभाविप ने देशभर में 'नेशन फर्स्ट मार्च' निकलकर लोगों को देशभक्ति की भावना के साथ एकजुट करने का काम किया। वहीं, सेवानिवृत्त सैनिकों ने राष्ट्रवाद का खुला समर्थन करने के लिए 'पिपुल फॉर नेशन' मार्च का आह्वान किया। फलस्वरूप हजारों की संख्या में लोग देश की एकता–अखंडता और संप्रभुता के लिए सड़क पर उतरे। जेएनयू की घटना के बाद विश्वविद्यलय परिसर में आहुत पहली आम सभा को संबोधित करते हुए पूर्व मेजर जनरल जी. डी. बख्शी ने कहा कि देश की रक्षा के लिए जवान अपनी जान तक गंवाते हैं, उनमें कुछ जेएनयू से भी पढ़े थे.. लेकिन विश्वविद्यालय में लगे देश विरोधी नारों में जवानों के विश्वास को क्षति पहुंचाई है। पंपोर में शहीद हुए कैप्टन पवन और महाजन का जिक्र करते हुए श्री बख्शी ने कहा कि ये दोनों जवान भी जेएनयू के छात्र थे, मगर यहां उनकी शहादत पर किसी ने आंसू नहीं बहाए।

जेएनयू में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के खिलाफ जनआक्रोश के बीच सिनेमा, कला और लेखन आदि क्षेत्र से जुड़े बुद्धिजीवियों ने देशवासियों से अपील की कि वो उन तथाकथित लोगों से सावधान रहें जो अफजल की फांसी और देश के संविधान पर उंगलियां उठा रहे हैं। बुद्धिजीवियों ने माना कि देश विरोधी नारे लगाने वाले किसी भी लिहाज से आतंकी हमलों को अंजाम देने वालों से कम खतरनाक नहीं हैं।

इतना ही नहीं, जेएनएसयू अध्यक्ष कन्हैया कुमार को सशर्त जमानत देते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय की खंडपीठ ने भी सख्त टिप्पणी की। न्यायालय ने कहा कि इस प्रकार की दूषित मानसिकता का उपचार जरूरी है अन्यथा यह महामारी का रूप ले लेगी। न्यायमूर्ति प्रतिभा रानी ने तो यहां तक कहा कि नारे लगाने वाले तब तक स्वतंत्र हैं जब तक देश के सैनिक सीमा पर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित किए हुए हैं। जिस दिन उनकी सुरक्षा पर आशंका के बादल छायेंगे वो कोई नारा नहीं लगा सकेंगे।

वहीं, जेएनयू परिसर में अभाविप द्वारा फिल्म 'बुद्धा इन ए ट्रैफिक जाम' की प्रस्तुतीकरण के आयोजन के दौरान फिल्म अभिनेता अनुपम खेर ने छात्रों से सवाल पूछा कि देश के विरोध में नारे लगाने वालों को कोई हीरो कैसे बना सकता है? आखिर किसी को हीरो बताने की परिभाषा क्या है? उन्होंने कहा कि देश का असली हीरो तो वह व्यक्ति है जिसने अपनी मातृभूमि के सम्मान में चार–चांद लगाये, उसकी रक्षा–सुरक्षा में अपना सर्वस्व लुटाया...।

फिलहाल जेएनयू में लगे राष्ट्रविरोधी नारों की जांच और दोषियों पर कार्रवाई किए जाने के नाम पर खींचतान जारी है। जांच के ज्वार के बीच जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा गठित की गयी एक उच्च स्तरीय आंतरिक जांच कमेटी ने देशद्रोह मामले में उमर खालिद और अनिर्बान भट्टाचार्य को वैमनस्यता, जातिगत या क्षेत्रीय

भावनाएं भड़काने या छात्रों के बीच कटुता फैलाने का 'दोषी' पाया। जिसके बाद समिति ने अपनी रिपोर्ट में छात्र संघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार समेत पांच छात्रों के निष्कासन की सिफारिश भी की है।

जेएनयू के कुलपति एम. जगदीश कुमार ने भी रिपोर्ट के आधार नौ फरवरी के दिन कुछ छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय के कायदे कानूनों का उल्लंघन करने का दोषी बताते हुए उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई किए जाने की बात कही। विश्वविद्यालय की ओर से कन्हैया और उमर सहित 21 छात्रों को कारण बताओ नोटिस भी भेजा गया। जिनमें आठ निलंबित छात्र उमर खालिद, अनिर्बान भट्टाचार्य, आशुतोष, रामा नगा, अनंत कुमार, श्वेता राज और ऐश्वर्या अधिकारी शामिल हैं। इनके अलावा, अन्य दस छात्र वे भी हैं जिनके बारे में पुलिस ने विश्वविद्यालय से जानकारी मांगी थी।

बहरहाल, जांच और कार्रवाई की इस लामलपेट के बीच कन्हैया, उमर और अनिर्बाण जैसे छात्र सशर्त जमानत पर छूट चुके हैं। और फिर से भाषणबाजी और अन्य कार्यक्रमों में मशगूल हैं। मगर देश के खिलाफ जहर उगलने की घटना के बाद उनका इंसाफ होना बाकी है। जिसको लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद 'जेएनयू का सच' संबंधी परिचर्चा भाषण के कार्यक्रम देश भर में चलाये हुए है।

तानाशाही रवैया अपना रहे हैं कुलपति

अभाविप ने कहा फैसला लेने में अक्षम कुलपति अपने पद के योग्य नहीं

जम्मू। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने जम्मू विश्वविद्यालय में रक्तदान शिविर लगाने की अनुमति नहीं देने पर कुलपति की आलोचना की है। अभाविप ने कहा कि कुलपति अपने पद के साथ इंसाफ नहीं कर रहे हैं।

कुलपति पर तानाशाही रवैया अपनाने का आरोप लगाते हुए अभाविप की प्रदेश सचिव वर्षा जांडियाल ने कहा कि त्रिमूर्ति (सरदार भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव) के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य पर हर वर्ष विद्यार्थी परिषद जम्मू विश्वविद्यालय में रक्तदान शिविर लगाती है लेकिन इस बार कुलपति ने शिविर नहीं लगाने दिया। जो देशवासियों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ है।

कुलपति के फैसले को राष्ट्रविरोध की संज्ञा देते हुए वर्षा जांडियाल ने कहा कि विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान नहीं हो रहा है। हालात यह है कि कुलपति लोगों से पूछ रहे हैं कि क्या आडिटोरियम रक्तदान के लिए देना चाहिए या नहीं, इससे पता चलता है कि कुलपति अपने पद के कितने योग्य हैं। इतना ही नहीं, विश्वविद्यालय में डीडीई में राजनीति विज्ञान और इकोनॉमिक्स व हयूमन जेनेटिक कोर्स बंद कर दिए गए हैं। विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों में अस्सी फीसद लड़कियां हैं, गर्ल्स हॉस्टल के निर्माण की तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। विश्वविद्यालय नियमों के अनुसार डेढ़ महीने में परिणाम निकलने चाहिए, लेकिन पांच छह महीने का समय लगता है। विश्वविद्यालय में स्थायी अध्यापकों की जरुरत है और नियुक्तियां करने में देरी की जा रही है।

वर्षा ने सवाल उठाया कि एक तरफ कुलपति रक्तदान शिविर के लिए विद्यार्थी परिषद को हॉल नहीं दिया तो दूसरी तरफ कई अन्य संगठनों को सेमिनार करने की इजाजत दी जा रही है। आखिर किस आधार पर कार्यक्रम को स्वीकृति दिये जाने का या रोके जाने का निर्णय लिया जा रहा है यह बात छात्रों को स्पष्ट तौर पर बताई जानी चाहिए।

'कर्मठता का श्रेष्ठ एवं आदर्श उदाहरण है सूर्यकृष्ण जी का जीवन'

श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित सरकार्यवाह मा. भैयाजी जोशी व अन्य

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक सूर्यकृष्ण के निधन पर दिल्ली स्थित संघ कार्यालय केशव कुंज में श्रद्धान्जलि सभा का आयोजन किया गया। स्वर्गीय सूर्यकृष्ण जी को श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें स्मरण करते हुए सरकार्यवाह सुरेश उपाख्य भैयाजी जोशी ने कहा कि एक ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति को हम श्रद्धान्जलि अर्पित करने के लिए एकत्र हैं, जिन्होंने अपनी कई काव्य पक्तियों को स्वयं जीकर अर्थ प्राप्त कराया। उन्होंने कहा कि संघ की प्रार्थना की पंक्तियों 'पतत्वेष कायो नमस्ते–नमस्ते।' का अर्थ समझना है तो हमें स्वर्गीय सूर्यकृष्ण जी के जीवन को समझना होगा।

सरकार्यवाह ने कहा कि वर्ष 1954–55 के कालखंड में समय प्रतिकूल था। महात्मा गांधी की हत्या के बाद संघ की हर ओर उपेक्षा हो रही थी। ऐसे समय में संघ के साथ जुड़े रहना अंगारों पर चलने से कम नहीं था। पर जिन्होंने 'तन समर्पित मन समर्पित' पंक्तियां जीवन में बार–बार सुनी होंगी उन्हें इस प्रकार के अंगारों का भय नहीं रहा होगा। इसी तरह के महान व्यक्तित्व थे सूर्यकृष्ण जी.. जिनके जीवन को आदर्श के रूप में हमने जीते–जागते देखा है। शरीर दुर्बल हुआ होगा पर मन तो दुर्बल नहीं हुआ। शरीर की सब प्रकार की व्याधियों को मात करते हुए मन की उस शक्ति के साथ चलने वाला ऐसा पुरुषार्थी व्यक्तित्व अर्थात वो सूर्यकृष्ण जी हैं। उनका कहना था, 'जब मैं संघ के लिए समर्पित हूं तो जो संघ कहेगा मैं करूंगा।' यह कर्मठता का एक बहुत श्रेष्ठ उदाहरण है।

इससे पूर्व, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक सूर्यकृष्ण जी की इच्छा थी कि मृत्यु के पश्चात् उनके अंगों को दान किया जाये ताकि उनके अंग दूसरों के काम आ सके। ऐसे में उनके नेत्रदान व देहदान के संकल्प को पूरा करते हुए गुरू नानक नेत्र केंद्र को 'नेत्र' एवं 'देह' वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज, दिल्ली को सौंपा गया। 13 मार्च 2016 की दोपहर में सूर्यकृष्ण जी देहावसान हुआ था।

श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल, सह सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले, अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहन वैद्य, अखिल भारतीय कार्यकारणी सदस्य इन्द्रेश कुमार, अशोक बेरी, उत्तर क्षेत्र प्रचारक प्रमुख प्रेम कुमार और विश्व हिन्दू परिषद् के महामंत्री चम्पत राय आदि लोग सम्मिलित रहे।

सूर्यकृष्ण जी एक विशेष भौगोलिक व्यक्ति थे। वे जिस काम में लगते, ऐसा लगता था मानो उस क्षेत्र के हर विषय से उनका गहरा नाता है। सूर्यकृष्ण जी के बहुआयामी व्यक्तित्व से एक सामान्य कार्यकर्ता संघ की योजना और विचार को समझ सकता है।

- बजरंग लाल गुप्त, संघचालक, उत्तर क्षेत्र, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

सूर्यप्रकाश जी का जाना ऐसा लग रहा है कि हमारे सिर पर से किसी संरक्षक का हाथ हट गया है। उनकी बातें और कार्य निष्ठा सदैव लोगों को देश व समाज हित में कार्य के लिए प्रेरित करती रहेंगी।

- रामलाल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारतीय जनता पार्टी

सूर्यकृष्ण जी को भिन्न–भिन्न मत–पंथ–संप्रदायों और भारतीय धर्म–संस्कृति की बहुत गहरी समझ थी। विरले ही कोई व्यक्ति ऐसी प्रतिभा का धनी होगा। उनके मार्गदर्शन में ही दिल्ली के मंडोली में वेद विद्यालय की स्थापना उनकी दूरदर्शिता को भी दर्शाता है।

- कुलभूषण आहूजा, संघचालक दिल्ली, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

'विद्यार्थी डटकर करें राष्ट्र विरोधी ताकतों का सामना'

जेएनयू में हुई राष्ट्र विरोधी घटना पर 'थिंक इंडिया' द्वारा भोपाल में परिचर्चा का आयोजन

भोपाल। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में लगे देश विरोधी नारों की जितनी भी निंदा की जाये वो कम है। इन बड़े शैक्षणिक संस्थानों एवं केंद्रीय विश्वविद्यालयों को बीस हजार करोड़ रुपये की राशि आवंटित की जाती है लेकिन बड़े शर्म की बात है कि इन संस्थानों में कुछ छात्रों और शिक्षकों द्वारा राष्ट्रविरोधी गतिविधियां चलायी जा रही हैं। कुछ छात्रों और शिक्षकों की इस गतिविधि के कारण जेएनयू जैसे संस्थान की बदनामी हुई।

उक्त बातें निजी विश्वविद्यालय आयोग के चेयरमैन प्रो. ए. के. पांडेय ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 'थिंक इंडिया' फोरम द्वारा जेएनयू में घटित राष्ट्रविरोधी घटना पर आयोजित एक परिचर्चा में कहीं। इस परिचर्चा का आयोजन भोपाल के एक्सीलेंस कॉलेज में किया गया था।

परिचर्चा में विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित स्वदेश हिंदी दैनिक के संपादक अक्षत शर्मा ने कहा कि जेएनयू जैसी घटनाएं देश को तोड़ने वाली हैं। ऐसी गतिविधियों को तुरंत रोकने की जरूरत है। इस दौरान विद्यार्थियों से आह्वान करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि सभी विद्यार्थी मिलकर राष्ट्रविरोधी ताकतों से डटकर सामना करें। वहीं परिचर्चा के मुख्य वक्ता अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रदेश संगठन मंत्री विजय अठवाल ने कहा कि जेएनयू में भारत विरोधी गतिविधियां लम्बे समय से की जा रही थी लेकिन इस बार देशद्रोहियों के असली चेहरे पूरे देश के सामने उजागर हुए हैं। जो लोग ऐसे देश विरोधी नारे लगाने वालों का समर्थन कर रहे है वह भी बहुत निंदनीय है। अठवाल ने कहा की जेएनयू में प्रत्येक विद्यार्थी पर सरकार लगभग तीन लाख रूपये खर्च करती है ताकि देश में प्रतिभावान छात्रों को उच्च शिक्षा मिल सके, लेकिन नौ फरवरी को देश विरोधी नारे लगाने वालों को माफ नहीं किया जा सकता।

परिचर्चा की अध्यक्षता कर रहे एक्सीलेंस कॉलेज के प्राचार्य प्रो. एम. एल. नाथ ने छात्र–छात्राओं से कहा कि विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के साथ–साथ राष्ट्र प्रेम की भावना मन में प्रबल करें। इस परिचर्चा में एक्सीलेंस कॉलेज के विद्यार्थियों सत्यम मिश्रा, शिवम यादव और सौम्या द्विवेदी आदि भी अपने विचार रखे। इस दौरान छात्रों ने उच्चतम न्यायालय से जेएनयू का संज्ञान लेकर कड़ी कार्यवाही करने की अपील की। ■

युवाओं में राष्ट्रप्रेम का भाव जगाने वाली शिक्षा की जरूरत : द्रोपदी मुर्मू

'थिंक इंडिया' सम्मेलन रांची में संपन्न

रांची। शिक्षा का मतलब सिर्फ प्रमाणपत्र हासिल करना नहीं अपितु ज्ञान हासिल करना है। आज देश में ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो छात्रों में देशभक्ति की भावना को जागृत करे ताकि छात्र आगे जाकर राष्ट्रनिर्माण में भागीदार बनें और राष्ट्र का उत्थान करें। देश कई मामलों में प्रगति कर रहा है लेकिन शोध क्षेत्र में अभी विशेष ध्यान दिया जाना बाकी है। युवा वर्ग खोजी प्रवृत्ति के होते हैं उन्हें अपने अंदर की प्रतिभा को पहचानने के साथ उसे रचनात्मक रूप से आगे बढ़ाने की कोशिश करती रहनी होगी।

उक्त बातें झारखंड की राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा आयोजित 'थिंक इंडिया' अधिवेशन में छात्रों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हर युवा में विशेष प्रतिभा होती है, बस उसे निखारने की जरूरत है। आज के दौर में हमारा देश मार्केटिंग हब हो गया है। अच्छे अवसर की तलाश में प्रतिभावान युवा दूसरे देशों में पलायन कर रहें हैं। ऐसे में जरूरत है कि इन युवाओं को बेहतर अवसर प्रदान करने के साथ उनमें राष्ट्रप्रथम की भावना का भी विकास किया जाए।

अधिवेशन को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने कहा कि 'थिंक इंडिया' का मूल उद्देश्य राष्ट्रवादी चिंतन को विकसित करना है। उन्होंने कहा कि विदेशी आक्रांताओं ने हमारी आस्था के प्रतीक मंदिरों, संस्कृति और संस्कारों का पाठ पढ़ाने वाले शिक्षण संस्थानों पर हमला कर भारत के स्वाभिमान पर चोट की। ऐसे में राष्ट्रवादी चिंतन की अलख को जगाये रखने के लिए वर्ष 1857 के बाद मद्रास विश्वविद्यालय, मुंबई विश्वविद्यालय और कोलकाता

विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इसी क्रम में ज्ञान के साथ राष्ट्र भावना के प्रवाह को ध्यान में रखकर पं. मदन मोहन मालवीय जी के प्रयास से काशी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

मौजूदा परिस्थिति में 'थींक इंडिया' की आवश्यकता एवं संकल्पना पर थिंक इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक आशीष चौहान ने प्रकाश डालते हुए कहा कि 2006 में बेंगलुरू से 'थिंक इंडिया' की शुरूआत हुई थी। तब से लेकर आज तक इसके राष्ट्रीय समागम होते रहे हैं। यह एक स्वतंत्र फोरम है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रनिर्माण में युवाओं की सहभागिता को बढ़ाना है। भारत अति विकसित शक्ति संपन्न देश है और इस शक्ति को सही दिशा देना छात्रों का दायित्व है। यह दायित्व पूर्ण करने में थींक इंडिया राष्ट्रीय और केन्द्रीय संस्थानों में अहम भूमिका निभा रहा है।

'थिंक इंडिया' के अधिवेशन में आए छात्रों को संबोधित करते हुए पद्मश्री अशोक भगत ने आदर्शवाद की व्याख्या करते हुए कहा कि भारत में उपलब्धियों की विशेष क्षमता है। उन्होंने कहा कि हम लोग क्षमतावान लोग हैं, हम जो चाहे वो कर सकते हैं। हम अपने आत्मविश्वास एवं लोगों के प्रोत्साहन की मदद से खुद का परस्पर विकास कर सकते हैं।

आईआईटी मुंबई के प्रोफेसर बरदराज बापट ने भारत को युवा देश बताते हुए कहा कि पूरा विश्व भारत को एक प्रेरणा स्रोत के रूप में देख रहा है। समूचे विश्व में लगभग साम्यवाद का खात्मा हो चुका है एवं पूंजीवाद की स्थिति भी जर्जर है। परंतु भारत हमेशा से ही अच्छी अर्थव्यवस्था का धनी रहा है। युवा वर्ग जो तकनीकी संस्थानों से जुड़ा हुआ है वह भी अब उद्यमी बनने की ओर अग्रसर है। इस नए परिवेश में राष्ट्रवादी सरकार की यही उपलब्धी है।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए झारखंड के मुख्यमंत्री रघुवर दास ने अपने छात्र जीवन के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि मैं छात्र जीवन से ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ा रहा हूं। आज मैं जो भी हूं उसमें विद्यार्थी परिषद् का बहुमूल्य योगदान है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी परिषद ही एक ऐसा संगठन है जो राजनीति से पूरी तरह पृथक कार्यक्रम आयोजित कराता है। साथ ही थिंक इंडिया कार्यक्रम मे पूरे देश भर के अलग–अलग संस्थानों से आए हुए छात्रं एवं छात्राओं को अभिनंदन करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने झारखंड के सभी शिक्षण संस्थानों को थिंक इंडिया के मंच से पूरा सहयोग करने का भी आश्वासन दिया। साथ ही उन्होंने सभी छात्र–छात्राओं को अपने अपने विषयों में प्रगाढ़ रूप से मेहनत करने एवं आगे बढ़ने की सलाह दी। ■

प्रिय मित्रों,

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का अप्रैल 2016 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों तथा खबरों का संकलन किया गया है। आशा है यह अंक आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा।

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव एवं विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई–मेल पर अवश्य भेजें।

"छात्रशक्ति भवन"

26, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग

नई दिल्ली – 110002.

फोन : 011–23216298

ई–मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com

वेबसाईट : www.abvp.org

'मूल्य आधारित शिक्षा से देश व समाज की तरक्की संभव'

गाजियाबाद में 'टेक-प्रो विजन भारत 2K16' का आयोजन

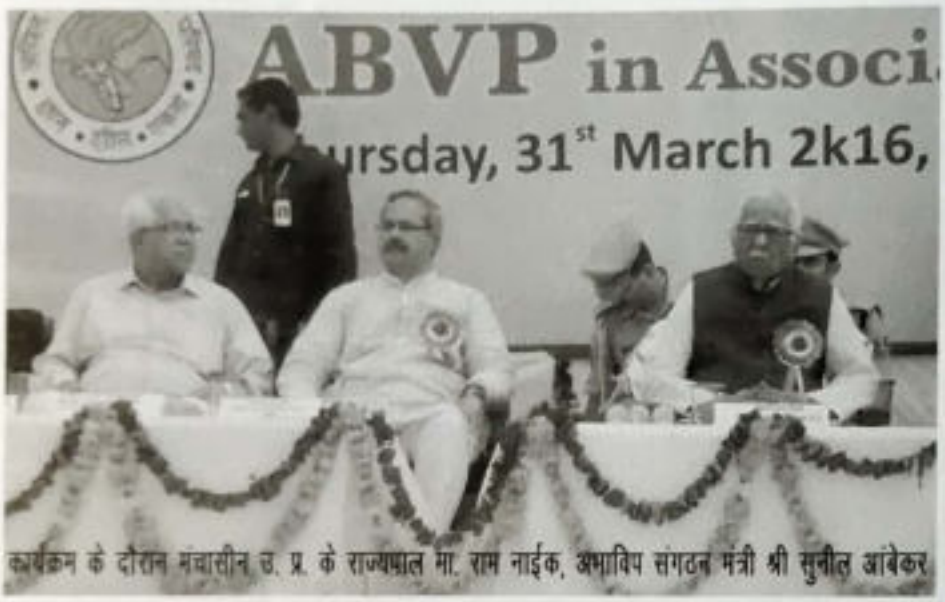

कार्यक्रम के दौरान मंचासीन उ. प्र. के राज्यपाल मा. राम नाईक, अभाविप संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर

गाजियाबाद। जब तक देश के युवाओं को मूल्य आधारित शिक्षा नहीं दी जायेगी, तब तक देश और समाज तरक्की नहीं कर सकता है। हमारी शिक्षा पद्धति का मूल ऐसा हो जो हमें इंसान बनाये तभी उसकी उपयोगिता है। आतंकवादी बेहतरीन तकनीक प्रयोग करना जानते हैं। वे भी पढ़े-लिखे और ज्ञानवान हैं लेकिन संस्कारों का अभाव होने से वह गलत दिशा में बढ़ गये हैं। ऐसे में हमें अपनी शिक्षा पद्धति में मूल्यपरक शिक्षा को महत्व देना होगा।

उक्त बातें उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक ने दिल्ली-मेरठ हाईवे पर स्थित एचआरआईटी कॉलेज अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा आयोजित 'टेक-प्रो विजन भारत-2K16' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहीं। बतौर मुख्य अतिथि राज्यपाल ने कहा कि केवल शिक्षा से ही युवा प्रगति नहीं कर सकता है। इसके लिए युवा पीढ़ी को संस्कृति और संस्कारों से भी रूबरू कराने की जरूरत है।

राज्यपाल ने कहा कि अक्सर किसानों को अनपढ़ कहा जाता है लेकिन अपने अनुभव के बल पर किसानों ने अपने क्षेत्र में काफी तरक्की की है। उन्होंने कहा कि वर्ष 1954 में देश में बाहर से गेंहू आयात होता था लेकिन आज तीन गुने से ज्यादा आबादी होने पर भी देश में गेंहू आयात नहीं होता। देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है लेकिन उन्हें पर्याप्त मौका नहीं मिलता यह खेद की बात है। ऐसे में देश की प्रतिभाएं विदेशों को पलायन करती है। राज्यपाल ने 'टेक-प्रो विजन' का आयोजन करने वाले संगठन अभाविप के प्रयासों की प्रशंसा की और कहा कि अगर ऐसे ही कार्यक्रम देश में होते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब देश के युवा अपनी प्रतिभा का प्रयोग देश के विकास के हित में करेंगे और कोई पलायन नहीं होगा।

अभाविप के संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि परिषद् सदैव समाज और देश हित के कार्यों को लेकर तत्पर रहता है। ऐसे में 'टेक-प्रो विजन' जैसे कार्यक्रम भी हमारे एजेंडे का हिस्सा है। जहां तक बात मूल्यपरक शिक्षा की है तो हमें सबसे पहले अपनी शिक्षा पद्धति में परिवर्तन की जरूरत है ताकि हम बच्चों को पहले देश और देश की बहुमूल्य थाती से अवगत करा सकें। वर्तमान की शिक्षा पद्धति उधार पर आधारित है, जिसमें देशहित की भावना दूर-दूर तक नहीं दिखती। ऐसे में जरूरी है कि पहले पाठ्यक्रम बदले, पद्धति बदले फिर युवाओं को उसके अनुरूप सुसंस्कृत और शिक्षित किया जाये।

इस दौरान पूर्व सीसीएस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन. के. तनेजा, एपीजे अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय के कुलपति विनय पाठक तथा एचआरआईटी के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। ■

विद्यार्थियों को सही अवसर प्रदान करेगा 'साविष्कार लाईव'

कार्यक्रम में संबोधित करते हुए मध्यप्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता

भोपाल। आविष्कार हमारी जरूरतों और उपयोगिता के सांचे में ढले विकल्प के समान है। जो हमारी सोच और सृजनात्मकता के बलबूते यथार्थ को प्राप्त होता है। यदि विद्यार्थियों को अपनी कल्पना और प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर मिले तो निश्चित ही हम एक ऐसे भारत का निर्माण करने में सफल होंगे, जिसका सपना एपीजे अब्दुल कलाम ने देखा था। आज के समय में रोजगार के लिए डिग्री के साथ कौशल होना भी जरूरी है और अपने कौशल का प्रदर्शन तभी हो सकेगा जब आपको अवसर मिले। इस क्रम में साविष्कार लाइव का उद्देश्य विद्यार्थियों के वही अवसर प्रदान करना है।

उक्त बातें भाजपा नेता व मध्य प्रदेश सरकार में उच्च शिक्षा मंत्री उमाशंकर गुप्ता ने विद्यार्थी कल्याण न्यास, क्रिस्प और मेपकोस्ट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में साबिष्कार लाईव की वेबसाइट 'WWW.SAVISKARLIVE.COM' का लोकार्पण करते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की मेक इन इंडिया योजना में इस वेबसाइट का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा, क्योंकि सरकार की योजनाओं और साविष्कार लाईव की पहल दोनों का मकसद एक है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने अपने उदबोधन में कहा कि हमारा देश जब गुलाम था तब भी देश में सी.वी. रमन जैसे महान वैज्ञानिक थे और आज विश्व के पास जो भी ज्ञान और विज्ञान है वो हमारी देन थी। उन्होंने बताया कि जब–तक विकास में समाज के प्रत्येक व्यक्ति का योगदान नहीं रहेगा तब तक समाज में शांतिपूर्ण विकास नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि आज समाज विद्यार्थियों के सकारात्मक और सृजनात्मक योगदान की आवश्यकता है।

वहीं, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एआईसीटीई के अध्यक्ष प्रो. अनिल डी. सहस्त्रबुद्धे ने विद्योर्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जब भविष्य में इस वेबसाइट के सकारात्मक परिणाम हमारे सामने आएंगे तब हमें इस वेबसाइट की महत्ता पता चलेगी। इस वेबसाइट के माध्यम से विद्यार्थी मेक इन इंडिया और डिजीटल इंडिया जैसी योजना में अपना सहयोग दे सकेंगे। उन्होंने कहा कि यदि हम दूसरों की समस्या को अपनी समस्या मानकर इनका समाधान करने की कोशिश करें तो नये आविष्कार हो सकते हैं।

इसके अलावा, मेपकोस्ट के महानिदेशक प्रमोद वर्मा ने साविष्कार को प्रभावी माध्यम बताया जिसका उपयोग करके विद्यार्थी देश के विकास में अपने योगदान दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह वेबसाइट 24 घंटे सात दिन चलती रहेगी और इसका सूरज कभी नहीं डूबेगा। ■

सबको सुलभ हो सस्ती एवं गुणवत्तापरक शिक्षा

रा. स्व. संघ की मार्च 2016 को नागौर (राजस्थान) में हुई अ. भा. प्रतिनिधि सभा में पारित शैक्षिक प्रस्ताव

किसी भी राष्ट्र व समाज के सर्वांगीण विकास में शिक्षा एक अनिवार्य साधन है, जिसके संपोषण, संवर्धन व संरक्षण का दायित्व समाज व सरकार दोनों का है। शिक्षा छात्र के अन्दर बीजरूप में स्थित गुणों व संभावनाओं को उभारते हुए उसके व्यक्तित्व के समग्र विकास का साधन है। एक लोक कल्याणकारी राज्य में शासन का यह मूलभूत दायित्व है कि वह प्रत्येक नागरिक को रोटी, कपड़ा, मकान और रोजगार के साथ–साथ शिक्षा व चिकित्सा की उपलब्धता सुनिश्चित करे।

भारत सर्वाधिक युवाओं का देश है। इस युवा की अभिरूचि, योग्यता व क्षमता के अनुसार उसे उचित शिक्षा के निर्बाध अवसर उपलब्ध कराकर देश के वैज्ञानिक, तकनीकी, आर्थिक व सामाजिक विकास में सहभागी बनाना समाज एवं सरकार का दायित्व है। आज सभी अभिभावक अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना चाहते हैं। जहाँ शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है वहाँ उन सबके लिए सस्ती व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पाना दुर्लभ हो गया है। विगत वर्षों में सरकार द्वारा शिक्षा में अपर्याप्त आवंटन और नीतियों में शिक्षा को प्राथमिकता के अभाव के कारण लाभ के उद्देश्य से काम करने वाली संस्थाओं को खुला क्षेत्र मिल गया है। आज गरीब छात्र समुचित व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित हो रहे हैं। परिणामस्वरूप समाज में बढ़ती आर्थिक विषमता समूचे राष्ट्र के लिए चिंता का विषय है।

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में सरकार को पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता तथा उचित नीतियों के निर्धारण के अपने दायित्व के लिए आगे आना चाहिए। शिक्षा के बढ़ते व्यापारीकरण पर रोक लगनी चाहिए ताकि छात्रों को महंगी शिक्षा प्राप्त करने को बाध्य न होना पड़े।

सरकार द्वारा शिक्षा संस्थानों के स्तर, ढांचागत संरचना, सेवाशर्तें, शुल्क व मानदण्ड आदि निर्धारण करने की स्वायत्त एवं स्वनियमनकारी व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए ताकि नीतियों का पारदर्शितापूर्वक क्रियान्वयन हो सके।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह मानना है कि प्रत्येक बालक–बालिका को मूल्यपरक, राष्ट्र भाव से युक्त, रोजगारोन्मुख तथा कौशल आधारित शिक्षा समान अवसर के परिवेष में प्राप्त होनी चाहिए। राजकीय व निजी विद्यालयों के शिक्षकों का स्तर सुधारने हेतु शिक्षकों को यथोचित प्रशिक्षण, समुचित वेतन तथा उनकी कर्तव्यपरायणता दृढ़ करना भी अति आवश्यक है।

परम्परा से अपने देश में सामान्य व्यक्ति को सस्ती व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में समाज ने महती भूमिका निभाई है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी सभी धार्मिक–सामाजिक संगठनों, उद्योग समूहों, शिक्षाविदों व प्रमुख व्यक्तियों को अपना दायित्व समझकर इस दिशा में आगे आना चाहिए।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा केन्द्र, राज्य सरकारों व स्थानीय निकायों से आग्रह करती है कि सस्ती व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सबको उपलब्ध कराने के लिए समुचित संसाधनों की व्यवस्था तथा उपयुक्त वैधानिक प्रावधान सुनिश्चित करें। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा स्वयंसेवकों सहित समस्त देशवासियों का भी आवाहन करती है कि शिक्षा प्रदान करने के पावन कार्य हेतु विशेषकर ग्रामीण, जनजातीय एवं अविकसित क्षेत्र में वे आगे आवें ताकि एक योग्य, क्षमतावान व ज्ञानाधारित समाज का निर्माण हो सके जो इस राष्ट्र के उत्थान व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

■

'संवैधानिक अधिकारों का दुरुपयोग कर रही केजरीवाल सरकार'

अभाविप ने दिल्ली सरकार पर सीवाईएसएस को अनुचित लाभ पहुंचाने का लगाया आरोप

नई दिल्ली। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने दिल्ली की केजरीवाल सरकार पर अपनी पार्टी के छात्र संगठन 'छात्र युवा संघर्ष समिति' (सीवाईएसएस) को अनुचित लाभ पहुँचाने का आरोप लगाया है। अभाविप का कहना है कि बीते छात्र संघ चुनाव में मिली हार के बाद दिल्ली सीएम अपने रसूख का प्रयोग सीवाईएसएस का छात्रों के बीच समर्थन बढ़ाने की कोशिश की जा रही है।

केजरीवाल सरकार द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले 21 कॉलेजों के छात्रों का विवरण मांगे जाने के खिलाफ अभाविप ने विश्वविद्यालय परिसर में प्रदर्शन किया। इस दौरान अभाविप ने केजरीवाल सरकार एवं दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन की इस मिलीभगत को साजिश करार दिया। अभाविप का कहना है कि केजरीवाल सरकार इस तरह का विवरण मांगकर अपने संवैधानिक अधिकारों का दुरूपयोग कर रही है।

प्रदर्शन के दौरान अभाविप के प्रदेश मंत्री भरत खटाना ने दिल्ली सरकार एवं विश्वविद्यालय प्रशासन के निर्णयों को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा कि केजरीवाल सरकार छात्रों का विवरण गलत तरीके से प्रयोग करना चाह रही है। केजरीवाल सरकार ने छात्रों का न केवल अकादमिक विवरण अपितु उनके फेसबुक एवं अन्य सोशल नेटवर्किंग साइट्स का विवरण भी मांगा है। इस आदेश से केजरीवाल सरकार की गलत मंशा का पता चलता है।

इस दौरान, अभाविप के दिल्ली विश्वविद्यालय इकाई के अध्यक्ष अभिषेक वर्मा एवं इकाई मंत्री प्रशांत मिश्रा ने दिल्ली विश्विद्यालय प्रशासन से ऑफलाइन फॉर्म की सुविधा भी प्रवेश प्रक्रिया में जारी रखने की मांग की। उन्होंने कहा कि इस प्रकिया के शुरू होने से छात्रों को प्रवेश लेने में काफी आसानी होगी। वहीं, प्रदर्शन के बाद अभाविप के प्रतिनिधि मंडल ने दिल्ली विश्विद्यालय वेलफेयर डीन से अपनी मांगो को लेकर मुलाकात की और अपना मांग पत्र भी सौंपा। ■

परिचर्चा

400 वर्ष पुरानी परंपरा टूटी, महिलाएं कर सकेंगी शनि पूजा

गिने-चुने ही ऐसे मंदिर हैं, जहां महिलाओं का प्रवेश वर्जित है। ऐसा ही एक मंदिर है महाराष्ट्र का शनि शिंगणापुर मंदिर। इस मंदिर में महिलाओं को पूजा करने देने की मांग को लेकर पिछले दिनों अभियान चला। इसके पक्ष-विपक्ष में तर्क दिए गए। शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती ने यह कहकर शनि मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर रोक को उचित माना कि शनि की दृष्टि अगर महिलाओं पर पड़ेगी तो रेप की घटनाएं और बढ़ेंगी। लेकिन व्यापक सहमति यह बनी कि शनि मंदिर में महिलाओं को पूजा करने का अधिकार मिले। मुंबई उच्च न्यायालय ने 1 अप्रैल को कहा कि पूजास्थलों पर जाना महिलाओं का मौलिक अधिकार है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कहा कि किसी मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर रोक अनुचित है। अब, शनि शिंगणापुर मंदिर में सालों पुरानी परंपरा टूट गई है। मंदिर के ट्रस्ट ने फैसला लिया कि महिलाओं को भी इस चबूतरे पर पूजा करने की इजाजत होगी।

जहां तक बात शनि मंदिर में महिलाओं के प्रवेश और पूजा की बात है, तो हम उसका स्वागत करते हैं। पहले महिलाएं गायत्री मंत्र नहीं जपती थी, आज जप रही हैं। सनातन धर्म और हिंदू संस्कृति में सबको समाहित करने का सामर्थ्य है। इस पर किसी प्रकार की राजनीति नहीं होनी चाहिए।

- कुमकुम झा, दिल्ली

विषय यह नहीं है कि इस मंदिर या उस दरगाह में हम महिलाओं को परम्परा के नाम पर इसलिए प्रवेश से रोक सकते हैं कि वो महिलायें हैं। विषय यह है कि पुरुष समाज या पितृसत्ता महिलाओं को किन–किन स्तरों पर बराबरी के हक से बेदखल कर सकता है? और कब तक? प्रतीकात्मक तौर पर हम इसे स्त्री अधिकार का संघर्ष मान सकते हैं लेकिन लड़ाई इससे आगे की है। स्त्री को स्त्री देह या देह से जड़ी वर्जनाओं के कारण, समाज में उनकी बराबरी की मांग को दबाया नहीं जा सकता यह विभिन्न रूपों में सामने आएगा। अभी यह मंदिर प्रवेश के लिए लड़ाई के रूप में सामने आ रहा है।

- अमितेश कुमार, दिल्ली

एक मंदिर में प्रवेश के लिए इतनी लंबी लड़ाई की जगह अगर यही महिलायें मिलकर अपनी आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए लड़ती तो क्या वह ज्यादा ठीक नहीं होता? हम सभी जानते हैं कि हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति क्या है? और इस स्थिति को कायम रखने में धर्म का कितना योगदान है, फिर भी अफसोस कि जिस जकड़न से महिलाओं को आजाद होने के लिए लड़ना चाहिए, वह खुद ही उसी में कैद होने को आतुर हैं। शनि मंदिर में प्रवेश मिल जाने से स्त्रियों के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्थिति में कैसा और क्या बदलाव आ जाएगा, यह क्या उस लड़ाई में शामिल कोई भी स्त्री मुझे समझा सकती है। मेरे सवाल का ठीक–ठीक जवाब उस लड़ाई में शामिल किसी भी महिला के पास शायद ही हो ।

- श्वेता यादव, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

सनातन धर्म में समय और परिस्थिति के साथ तमाम संस्कारों, रीति–रिवाजों में परिवर्तन होते रहे हैं। ऐसे में जब बिहार में सरकार के अधीन पटना के हनुमान मंदिर सहित दो दर्जन से भी अधिक मंदिरों में मुख्य पुजारी दलित हो सकते हैं तो शनि मंदिर में महिलाओं का प्रवेश अनुचित कैसे हो सकता है? आज जब समाज के तमाम जातियों और समुदायों में जागरूकता आई है और वैश्विक तौर पर समानता की बात की जा रही है तो इस मामले में सनातन धर्म कैसे पीछे रह सकता है? शनि मंदिर में महिलाओं को पूजा करने की अनुमति की सराहना की जानी चाहिए कि देर से उठाया गया सही कदम है।

- विनीत उत्पल, दिल्ली

सर्वविदित है कि भारतवर्ष में वामांगी के बिना कोई यज्ञ संपन्न नहीं होता है। हो सकता है, शनिदेव के भयावह स्वरूप और क्रूरता के किस्सों ने कोमल मन मस्तिष्क वाली महिलाओं के मन में भय पैदा किया हो, जिसके कारण यह नियम बन गए हों। पर आज की नारी इसे अपने अधिकार से जोडकर पुरूषों के साथ पूजा करने को तैयार है। कोई बात नहीं, हमारी सनातन परंपरा में एक ऐसा बहाव वेदसम्मत है, जो समय–समय पर गलत परंपराओं को समाप्त करते हुए युगसम्मत परंपराओं के चलन पर विश्वास बनाता है।

– संगीता पुरी, बोकारो, झारखंड

महिलाओं के मंदिर में प्रवेश की यह जो नई लड़ाई शुरू हुई है इसे धार्मिक पुनर्जागरण कहना जल्दबाजी होगी। फिर भी यह प्रयास सराहनीय है। ईश्वर महिला–पुरुष में भेदभाव नहीं करता तो धर्म के व्यवस्थापकों को यह हक किसने दे दिया कि वो महिलाओं को मंदिर में प्रवेश से रोकें। मंदिर की स्वच्छता और गरिमा का सम्मान करने वाले हर धर्मावलंबी को मंदिर में प्रवेश का अधिकार है।

– आदर्श शुक्ला, दिल्ली

'बच्चों में छिपी है राष्ट्र निर्माण की ताकत'

चुनार (मिर्जापुर)। आज के बच्चों में ही कल के राष्ट्र निर्माण की अकूत ताकत छिपी है। आवश्यकता है इनकी शक्ति को सकारात्मक दिशा की ओर ले जाने की। हमारे क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, बस जरूरत है कि उनके लिए अवसर मुहैया कराने की।

यह विचार मिर्जापुर से सांसद अनुप्रिया पटेल ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में कही। सांसद ने माना कि छात्र जीवन का उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण का होना चाहिए, जिसमें देश और समाज के लिए भाव के साथ विकास में अपना सहयोग देने की प्रबल इच्छा निहीत हो।

विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री आलोक पांडेय ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा राष्ट्र निर्माण किसी एक की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि इसके लिए हम सभी को अपना योगदान देना होगा। हमें समझना होगा कि बच्चे हमारे देश व समाज की बुनियाद हैं और उन्हें उसी के अनुरुप तैयार करना होगा।

समारोह के विशिष्ट अतिथि चेतनारायण सिंह ने कहा कि जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिए। सफलता के लिए बराबर प्रयास करते रहना ही बेहतर विकल्प है। हर बच्चे में कोई ना कोई प्रतिभा होती है, बस शिक्षकों व अभिभावकों को उन्हें परखने की जरूरत है।

सावरकर को गद्दार कहने पर भड़की अभाविप

वाराणसी। इंडियन नेशनल कांग्रेस के फेसबुक प्रोफाइल पर सावरकर को गद्दार कहने संबंधी फोटो पोस्ट करने पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने नाराजगी जतायी है। अभाविप का कहना है कि कांग्रेस कुत्सित मानसिकता की शिकार है और अपनी हार से बौखला गई है। अभाविप के महानगर मंत्री दिनेश दीक्षित ने कहा कि कांग्रेस सत्ता की भूखी है और सत्ता छिन जाने से कांग्रेसी परेशान हो गये हैं। इसलिए कांग्रेस अपनी ओछी हरकत पर उतर आई है और शहीदों को अपमानित करने का काम कर रही है। अभी कुछ दिन पहले कांग्रेस के एक अन्य नेता ने भगत सिंह की तुलना जेएनयू के एक छात्र से की थी। जो छात्र देशविरोधी नारे लगाने की आरोप में गिरफ्तार हुआ था, जिसे न्यायालय ने छह महीने की अंतरिम जमानत दी.. उसे शहीद बताना कुत्सिक मानसिकता को दर्शाता है।

विदित हो कि कांग्रेस ने फेसबुक पर एक तस्वीर पोस्ट की है, जिसमें एक तरफ भगत सिंह की फोटो लगी हुई है। फोटो पर लिखा है कि भगत सिंह 23 साल की उम्र में हंसते हुए फांसी पर चढ़ गए थे। इसी फोटो के बगल में एक और फोटो लगी है, जो सावरकर जी की है। उस पर लिखा है कि 50 साल की उम्र और जीने की ख्वाहिश की खातिर अंग्रेजो की गुलामी करना स्वीकार किया।

छद्म चेहरा बेनकाब होने का खौफ

अभाविप ने पूछा - आखिर सार्वजनिक मंच पर चर्चा से क्यों डर रहें हैं वामपंथी?

पुणे। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय और फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई) के मुद्दों पर राजनीति करने वाले अवसरवादी राजनीतिज्ञों ने फर्ग्युसन कॉलेज को भी नहीं बख्शा है। जेएनयू में हुई राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को लेकर फर्ग्युसन कॉलेज मे छात्र संवाद का राजनीतिकरण शुरू हो गया है।

इसकी शुरुआत तब हुई जब अभाविप के जेएनयू इकाई अध्यक्ष आलोक सिंह के द्वारा जेएनयू के मुद्दे पर छात्र संवाद का आयोजन फर्ग्युसन परिसर में करावाया। बड़ी संख्या में कॉलेज के विद्यार्थी जेएनयू गतिविधि पर परिचर्चा हेतु उपस्थित हुए। परिचर्चा के दौरान वामपंथी छात्र संगठनों के द्वारा परिचर्चा का विरोध किया गया और धमकी के साथ वामपंथी छात्रों ने जमकर उत्पात भी मचाया। इस पर जब विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ता उपद्रव की शिकायत करने पहुँचे तो उन्हें प्राचार्य से मिलने से रोका गया। प्रश्न यह उठता है कि जब छात्र संवाद फर्ग्युसन कैंपस के छात्रों द्वारा प्रस्तावित था और स्वयं छात्र विचार–विमर्श के लिए तैयार थे तो आखिर क्यों बाहरी तत्वों (एनसीपी समर्थक) को परिसर में आने और परिचर्चा को बाधित करने का मौका दिया गया।

सवाल यह भी उठता है कि धमकाने व उपद्रव मचाने के बजाय खुले मंच पर विचार रखने से वामपंथी डर क्यों रहे हैं? शायद उनको भय है कि खुली बातचीत में जेएनयू का सच बाहर आते ही वामपंथियों का छद्म चेहरा बेनकाब हो जायेगा। विद्यार्थी परिषद् का यह मानना है कि राजनीतिक उपद्रव से दूर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की भावना के साथ विद्यार्थियों के बीच अपनी बात रखनी चाहिए। परिसर में ओछी राजनीति... शिक्षा के स्तर को निम्नतर बनाने के साथ छात्रों के बीच आपसी मतभेद भी पैदा करती है। साथ ही शिक्षा के मार्ग से विचलित कर छात्रों के भविष्य को भी अंधकारमय बनाती है। ■

अभाविप का मोबाइल ऐप
डाउनलोड
करने की लिंक आपको
ABVP के
अधिकारिक अकाउंट
http://www.facebook.com/ABVPVOICE
https://twitter.com/abvpcentral
पर और वेबसाइट
www.abvp.org
पर भी उपलब्ध रहेगी।

मदुरै पुलिस का बर्बर चेहरा, अभाविप कार्यकर्ताओं पर भांजी लाठियां

मदुरै। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में लगे देशविरोधी नारेबाजी व अन्य गतिविधियों को लेकर स्थानीय लोगों में जागरूकता फैलाने को लेकर पर्चे बांटे जाने पर पुलिस की बर्बरता देखने को मिली। देशविरोधी कृत्यों से अवगत कराने को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा मदुरै कामराज कॉलेज में पर्चा बांटने पर पुलिस ने कार्यकर्ताओं पर लाठीचार्ज किया।

दरअसल, जेएनयू में हुई राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को लेकर अभाविप के राष्ट्रीय कार्यकारिणी परिषद् सदस्य श्रीकृष्णा एवं संगठन मंत्री अनबरासु अन्य कार्यकर्ताओं के साथ कॉलेज में जागरूकता अभियान चला रहे थे। जिसके विरोध में वामपंथी संगठन स्टूडेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) के कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को रोकने तथा जेएनयू मामले पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देने को लेकर नारेबाजी शुरू कर दी। इस दौरान, वामपंथी विचारधारा के छात्रों ने कॉलेज के प्राचार्य का घेराव भी किया। जिसके बाद मामले की सूचना होने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने बिना कोई जांच किये अभाविप अधिकारियों को हिरासत में लिया और पर्चे का वितरण भी रुकवा दिया। पुलिस के जवानों ने अभाविप कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों पर लाठीचार्ज किया और उनके खिलाफ अपशब्दों का भी प्रयोग किया।

पुलिस की क्रूरता इतने पर भी नहीं रुकी.. सब इंस्पेक्टर अरूण ने मारपीट से घायल कार्यकर्ताओं का इलाज तक कराने से मना कर दिया। वहीं, जब परिषद् के पदाधिकारी श्रीकृष्णा थाने में बेहोश हो गये तो भी पुलिस चुप्पी साधे रही। मगर घटना की जानकारी के बाद परिषद् के कार्यकर्ता थाने के बाहर जमा हो गये और पुलिस के खिलाफ नारेबाजी करते हुए हिरासत में बंद कार्यकर्ताओं को छोड़ने की मांग की। युवाओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए सब इंस्पेक्टर ने श्रीकृष्णा का टीवीएस अस्पताल में इलाज कराया।

पुलिस के गैर जिम्मेदाराना रवैये से क्रुद्ध छात्रों और अभाविप कार्यकर्ताओं ने पुलिस के खिलाफ प्रदर्शन मार्च निकाला.. जिसे पुलिस ने यह कहते हुए रोक दिया कि इस प्रदर्शन की अनुमति नहीं ली गयी है। इसके बावजूद प्रदर्शनकारियों ने तल्लाकुलम पोस्ट ऑफिस पर इकट्ठा होकर पुलिस के अत्याचार के खिलाफ नारेबाजी की। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने सब इंस्पेक्टर समेत चार पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई किये जाने की मांग भी की। आक्रोशित कार्यकर्ताओं द्वारा चक्का जाम किये जाने पर पुलिस ने 60 कार्यकर्ताओं को हिरासत में भी लिया.. लेकिन देर शाम उन्हें छोड़ दिया गया। ■

अभाविप ने जेएनयू के इतिहास और गतिविधियों से कराया रूबरू

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हुए देश विरोधी गतिविधियों और हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय में रोहित वेमुला आत्महत्या मामले के सच को जनमानस तक ले जाने के उद्देश्य से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् पूरे देश में 'जेएनयू – एचसीयू का सच' नाम से कार्यशाला आयोजित कर रही है। इस क्रम में बिहार, छत्तीसगढ़ और मध्यभारत में भी कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसके जरिए लोगों तक सच को बताया गया।

पटना (बिहार) में हुए 'जेएनयू–एचसीयू का सच' कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख स्वांत रंजन ने कहा कि भारत चिर पुरातन राष्ट्र है। दुनिया की कई प्राचीनतम सभ्यतांए व संस्कृति आज विलुप्त हो चुकी है। वहीं हजारों वर्षों से कई उतार–चढ़ाव देखते हुए भारत आज भी दुनिया में अपनी पहचान कायम किए हुए है। इसके पीछे का मुख्य कारण भारतीय समाज का राष्ट्रवादी चिंतन है। अभिव्यक्ति की आजादी भारत के कण–कण में हजारों वर्षों से दृष्टिगोचर है। लेकिन अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर देश और समाज को अपमानित कर देश को तोड़ने वाले को कत्तई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है।

मुख्य वक्ता के तौर पर कार्यशाला को संबोधित करते हुए विश्व विद्यार्थी युवा संघ के महासचिव अनिकेत काले ने कहा कि जेएनयू व एचसीयू में घटित घटनाएं भारतीय संप्रभुता को सरेआम चुनौती देने का कार्यक्रम था। देश विरोधी–अलगाववादी नारे लगाने वाले अपनी विलुप्त होते जा रही विचारधारा की अंतिम लड़ाई लड़ रहे हैं। इस मौके पर अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री निखिल रंजन ने कहा कि भारत का छात्र–युवा सदैव राष्ट्रवादी रहा है। लाल गुलामी करने वाले लोग आज भारतीय तिरंगा को लेकर लहरा रहे हैं यही भारतीय राष्ट्रवाद की जीत है। भारत में आयातित विचार कभी फला–फूला नहीं नहीं।

वहीं, जेएनयू–एचसीयू में घटित देशद्रोह घटना के विरोध में एक दिवसीय प्रांतीय कार्यशाला का छत्तीसगढ़ के पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में भी आयोजन हुआ। यहां कार्यशाला को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय मीडिया संयोजक साकेत बहुगुणा ने कहा कि वामपंथियों द्वारा जेएनयू में सांस्कृतिक संध्या के लिए अनुमति मांगी थी मगर वहां देश विरोधी नारे लगाये गये। जो स्पष्ट करता है कि आईसा, एसएफआई, डीएसयू, पीएसयू और एआईएसएफ जैसे वामपंथी संघटन देशद्रोह की बातें करते हैं।

अभाविप क्षेत्रीय संगठन मंत्री प्रफुल्ल अकांत ने कहा कि वामपंथियों के कथनी और करनी में आसमान जमीन का अंतर है। इसका उदाहरण यह है कि झारखंड के एक गांव से एक बच्ची शहर जाकर पढ़ना चाहती थी और जब वो दाखिला लेकर वापस आती है तो घर पहुंचने के पहले ही उसे मार दिया जाता है। क्योंकि वामपंथी कहते हैं कि घर में रह कर पढ़ो या उनका साथ दो। वही वामपंथी जेएनयू परिसर में भूखमरी और गरीबी से आजादी की बात करते हैं।

इसी क्रम में.. एस. वी. पॉलेटेनिक कॉलेज, भोपाल में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हए मध्यभारत के प्रांतीय संगठन मंत्री विजय अठवाल ने कहा कि जिस प्रकार से हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय में रोहित वेमुला की मौत पर दुख व्यक्त करने के स्थान पर उसे दलित बताने का काम किया गया वह दुर्भाग्यपूर्ण है। ठीक उसी प्रकार जेएनयू में देश को तोड़ने की बात करना और देश विरोधी नारे लगाना बहुत ही शर्म की बात है। उन्होंने कहा कि जेएनयू में वामपंथियों के द्वारा पहले भी इस तरह की घटनाओं का अंजाम दिया जाता रहा है। लेकिन इस बार उसके षड्यंत्र का पूरा सच देशवासियों के सामने आ चुका है। ■

जेएनयू में छात्रों को संबोधित करते अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर

रायपुर में आयोजित 'जेएनयू-एचसीयू का सच' कार्यशाला का उद्घाटन करते अभाविप के राष्ट्रीय मीडिया संयोजक साकेत बहुगुणा व अन्य

RNI No. 32464/78

छत्तीसगढ़

युवाओं को कौशल विकास का वैधानिक अधिकार देने वाला देश का एकमात्र राज्य

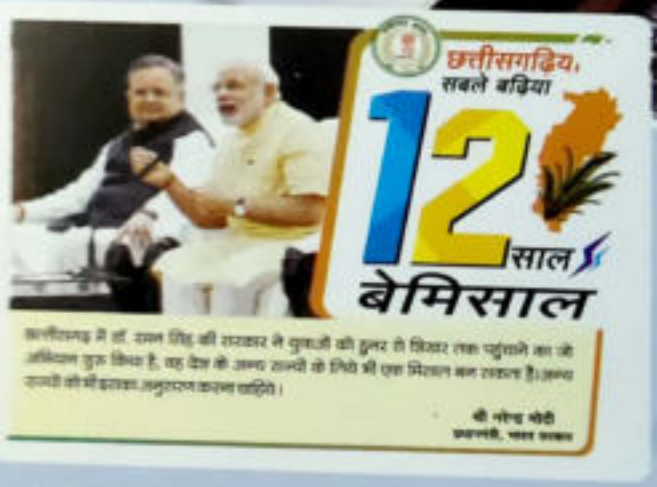

- देश के सबसे बड़े कौशल विकास कार्यक्रम का संचालन.
- देश के लक्ष्य में 14 प्रतिशत हिस्सा छत्तीसगढ़ का.
- 2 लाख से अधिक युवाओं का कौशल विकास.
- सभी 27 जिलों में लाइवलीहुड कॉलेज.
- 25 से अधिक व्यवसायों में निःशुल्क आवासीय कौशल प्रशिक्षण.
- सभी लाइवलीहुड कॉलेजों में ई-क्लास रुम

कुशल छत्तीसगढ़ उत्पादक छत्तीसगढ़ विकसित छत्तीसगढ़